संतोष चौबे

कवि , कथाकार, उपन्यासकार,
विज्ञान संचारक, शिक्षाविद्,
अग्रणी सामाजिक उद्यमी

कुलाधिपति

रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश

डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, खंडवा, मध्यप्रदेश

आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हज़ारीबाग़, झारखंड

कुलाध्यक्ष

डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, वैशाली, बिहार

अध्यक्ष

ऑल इंडिया सोसायटी फॉर इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कम्प्यूटर टेक्नॉलाजी (आईसेक्ट)

राज्य संसाधन केंद्र, मध्यप्रदेश

वनमाली सृजन पीठ

टैगोर अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं कला केंद्र

अंतरराष्ट्रीय हिंदी केन्द्र

नेशनल सेंटर फॉर आंत्रेप्रन्योरशिप एंड स्किल डेवलपमेंट

प्रधान संपादक/संरक्षक

इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिये, विश्व रंग संवाद,

वनमाली कथा , वनमाली वार्ता , रंग संवाद

भारतीय इंजीनियरिंग सेवा

भारतीय प्रशासनिक सेवा के लिये चयनित

संतोष चौबे

कवि, कथाकार, विज्ञान संचारक, शिक्षाविद् एवं सामाजिक उद्यमी

22 सितंबर, 1955 को मध्यप्रदेश (भारत) के छोटे से शहर खंडवा में जन्मे संतोष चौबे भारतीय इंजीनियरिंग सेवा तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा के लिये चयनित हुये और वर्तमान में वे डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय और रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति हैं तथा आईसेक्ट नेटवर्क, राज्य संसाधन केंद्र, वनमाली सृजन पीठ एवं टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला केंद्र के अध्यक्ष हैं। विश्वरंग उत्सव के वे संस्थापक निदेशक हैं।

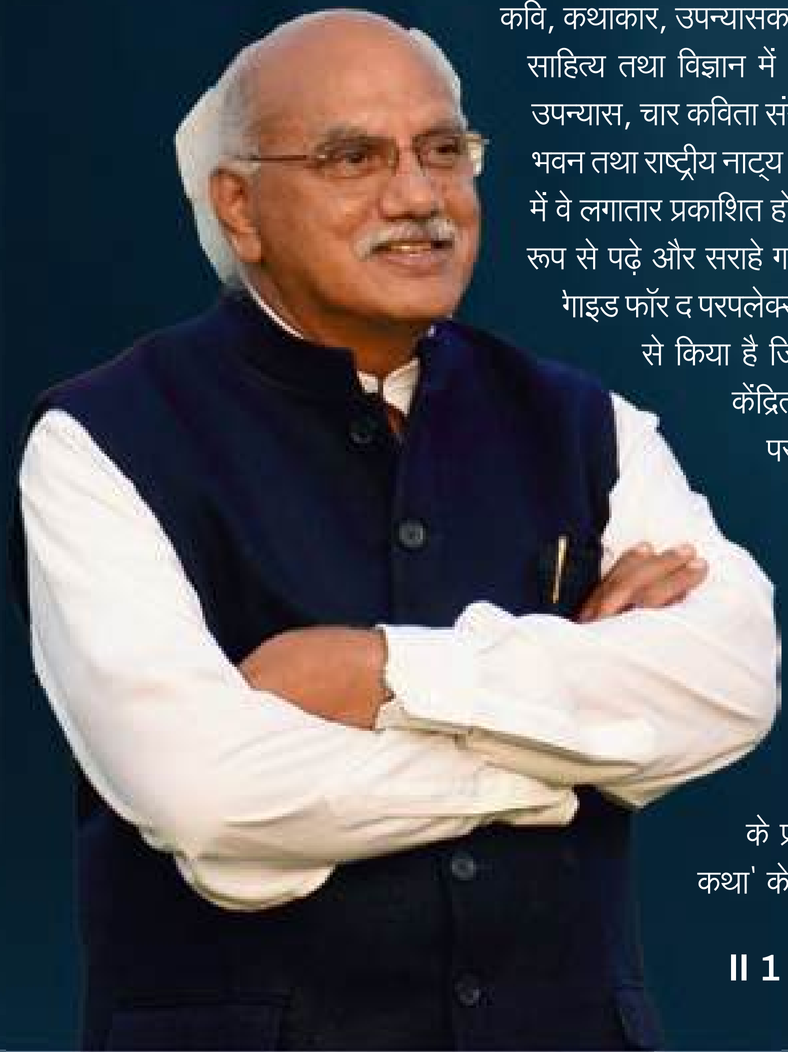

कवि, कथाकार, उपन्यासकार संतोष चौबे हिन्दी के उन विरल साहित्यकारों में से हैं जो साहित्य तथा विज्ञान में समान रूप से सक्रिय हैं। उनके सात कथा संग्रह, चार उपन्यास, चार कविता संग्रह प्रकाशित और चर्चित हुये हैं। कहानियों का मंचन भारत भवन तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में हुआ है तथा देश की सभी शीर्ष पत्र–पत्रिकाओं में वे लगातार प्रकाशित होती रही हैं। उनके द्वारा अनूदित निबंधों के अनुवाद व्यापक रूप से पढ़े और सराहे गये हैं। उन्होंने जर्मन दार्शनिक ई.एफ. शूमाकर की किताब 'गाइड फॉर द परपलेक्स्ड' का अनुवाद 'भ्रमित आदमी के लिये एक किताब' के नाम से किया है जिसे व्यापक प्रशंसा मिली। उन्होंने कथाकार वनमाली पर केंद्रित दो खंडों में, 'वनमाली समग्र' का तथा कथा एवं उपन्यास पर केंद्रित वैचारिक गद्य की दो पुस्तकों 'आख्यान का आंतरिक संकट' तथा 'कहानी स्वप्न और यथार्थ' का संपादन भी किया है। इसी के साथ उनकी आलोचनात्मक निबंधों की चार पुस्तकें 'अपने समय में', 'कला की संगत', 'परंपरा और आधुनिकता' तथा 'कहानी का रास्ता' प्रकाशित हुई हैं। वर्तमान में वे नाटक तथा कलाओं की समादृत अंतर्विधायी पत्रिका 'रंग संवाद' के प्रमुख संपादक हैं। वे वैश्विक संवाद की पत्रिका 'विश्वरंग – संवाद' के प्रधान संपादक तथा कथा केंद्रित प्रमुख पत्रिका 'वनमाली कथा' के संरक्षक हैं। उनके द्वारा संपादित मध्यप्रदेश के दो सौ से

अधिक कथाकारों पर केंद्रित कथाकोश 'कथा मध्यप्रदेश' को राष्ट्रव्यापी ख्याति मिली है। इसी क्रम में `विश्व रंग' के अवसर पर, उन्होंने देश भर के छः सौ से अधिक कथाकारों के कथा संचयन 'कथादेश' को अठारह खंडों में संपादित किया है। भोपाल के कथाकारों पर केन्द्रित चार खंडों में प्रकाशित कथा भोपाल और छः खंडों में प्रकाशित 'विज्ञान कथा कोश' तथा तीन खंडों में प्रकाशित `विज्ञान कविता कोश' के भी प्रधान संपादक हैं।

उनकी पुस्तक `कम्प्यूटर : एक परिचय' हिन्दी में कम्प्यूटर की पहली किताब थी जिसने विक्रय के कीर्तिमान स्थापित किये और जिसे भारत सरकार का 'मेघनाद साहा पुरस्कार' प्राप्त हुआ। इसी विषय पर पांच अन्य पुस्तकों का लेखन, बच्चों के लिये `कम्प्यूटर की दुनिया' एवं `कम्प्यूटर आपके लिये' शृंखला में छः अन्य पुस्तकों का लेखन। हाल ही में नवीनतम विज्ञान विषयों पर केंद्रित पैंतालीस पुस्तकों का संपादन और प्रकाशन किया। इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना तकनीक पर देश की पहली हिंदी पत्रिका `इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिये' का पिछले पैंतीस वर्षों से सतत संपादन करते हुए कई विज्ञान नाटकों का लेखन और मंचन किया जिनमें `गैलीलियो' और `सुकरात' चर्चित हैं।

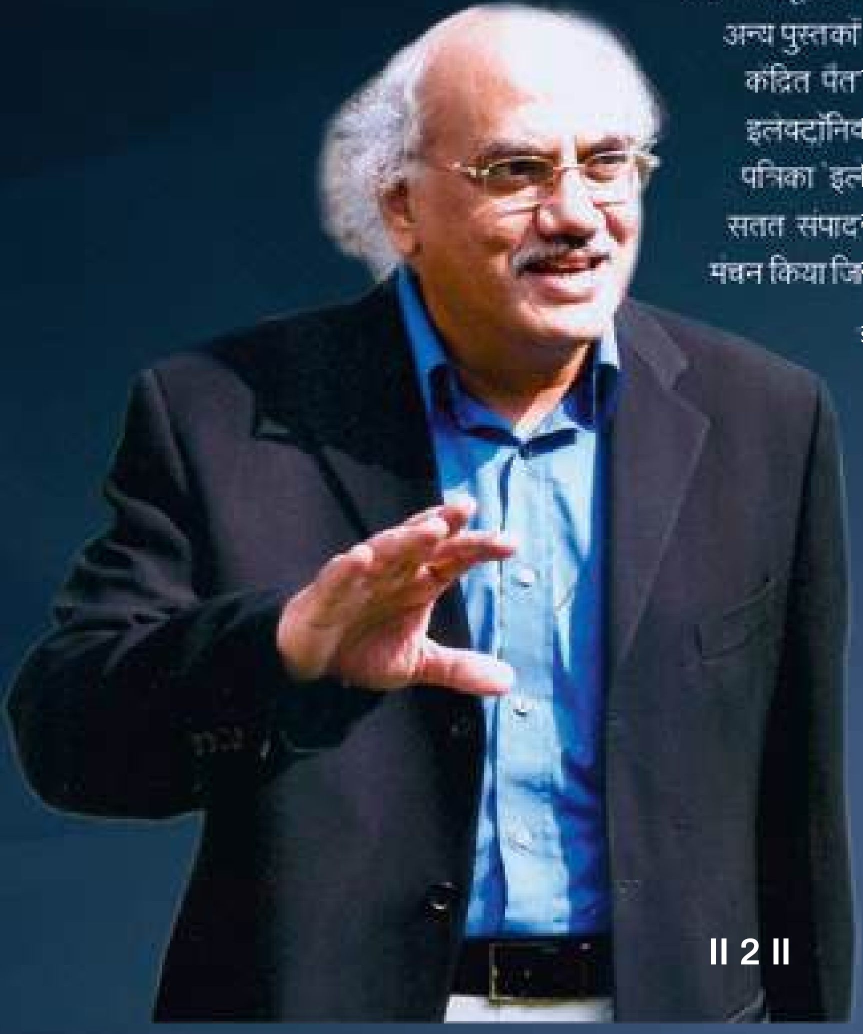

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी संतोष चौबे दूरदर्शी सोच रखते हुए पिछले चार दशकों से छोटे शहरों, विशेषकर ग्रामीण, आदिवासी और जनजातीय जिलों, विकासखंडों और पंचायतों में एक सामाजिक उद्यमी के रूप में सर्वश्रेष्ठ व सस्ती औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा प्रदान करने के लिये आईसेक्ट के 58,000 से अधिक केंद्रों के माध्यम से काम करते रहे हैं जिसने दूर–सुदूर अंचलों में निवास करने वाले लाखों लोगों के जीवन को बेहतर बनाया है। आईसेक्ट के अध्यक्ष एवं रबींद्रनाथ टैगोर

तथा सी.वी. रामन् विश्वविद्यालयों जैसे छ: विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति के रूप में उन्होंने सामाजिक उद्यमिता के नये रोल मॉडल को प्रस्तुत करते हुये देश को उन्नति के पथ पर ले जाने का नया रास्ता दिखाया है।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भोपाल से पढ़े एक इलेक्ट्रॉनिक व संचार इंजीनियर के रूप में, उनका चयन देश की शीर्ष निजी व सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों में हुआ। शहरी व ग्रामीण भारत के डिजिटल विभाजन को पाटने के उद्देश्य से भारतीय इंजीनियरिंग सेवा तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा के लुभावने कैरियर को त्याग कर 1985 में उन्होंने आईसेक्ट (ऑल इंडिया सोसायटी फॉर इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कम्प्यूटर टेक्नॉलॉजी) की स्थापना की।

संतोष चौबे प्रौढ़ साक्षरता आन्दोलन से भी जुड़े रहे हैं, उन्होंने अविभाजित मध्यप्रदेश में बुनियादी साक्षरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे मध्यप्रदेश में साक्षरता अभियान के राज्य संयोजक, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के सदस्य, राज्य संसाधन केंद्र के निदेशक और अब उसके अध्यक्ष हैं। 1991 से 2011 की अवधि में मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ ने देश में उच्चतम साक्षरता दर दर्ज कराई थी। उन्होंने भोपाल में साक्षरता व सतत शिक्षा के लिये राज्य संसाधन केंद्र की स्थापना की जिसे वर्ष 2014 में राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा, राष्ट्रीय साक्षरता पुरस्कार प्रदान किया गया।

वे भोपाल तथा देश में चतुर्वेदी समाज की अनेक गतिविधियों को बढ़ावा देने और संरक्षित करने का काम करते रहे हैं। 'चतुर्वेदी चंद्रिका' के संपादन से वे 13 वर्षों तक जुड़े रहे, समाज की होलियों तथा भजनों और गीतों को दृश्य–श्रव्य माध्यमों में प्रस्तुत करने का अनूठा काम उन्होंने किया और अब 12 खंडों में

चतुर्वेदी समाज के सांस्कृतिक इतिहास का संयुक्त संपादन भी उन्होंने किया है।

उन्हें कविता (कहीं और सच होंगे सपने) के लिये मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् का दुष्यंत कुमार पुरस्कार, आलोचना (कला की संगत) के लिये स्पंदन आलोचना सम्मान, अनुवाद (मॉस्को डायरी) के लिये मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का राष्ट्रीय पुरस्कार एवं उपन्यास (जलतरंग) के लिये शैलेश मटियानी तथा वैली ऑफ वर्ड्स पुरस्कार प्राप्त हुये हैं। विज्ञान लेखन के लिये भारत सरकार का मेघनाद साहा पुरस्कार, भारत सरकार का राष्ट्रीय विज्ञान प्रचार पुरस्कार, समग्र विज्ञान लेखन के लिये मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी का डॉ. शंकर दयाल शर्मा पुरस्कार, एवं मध्यप्रदेश शासन का राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान राष्ट्रपति द्वारा इंडियन इनोवेशन अवॉर्ड तथा नैसकॉम आई.टी. इनोवेशन अवॉर्ड एवं एशियन फोरम का प्रतिष्ठित i4d अवॉर्ड प्राप्त हुआ है। सामाजिक उद्यमिता के लिये उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित श्वॉब फाउंडेशन अवॉर्ड तथा सीनियर अशोक फेलोशिप भी प्राप्त हुये हैं। हाल ही में उन्हें लंदन में वातायन यू.के. का अंतरराष्ट्रीय शिखर सम्मान तथा पेरिस में 'भारत गौरव सम्मान' प्राप्त हुआ है।

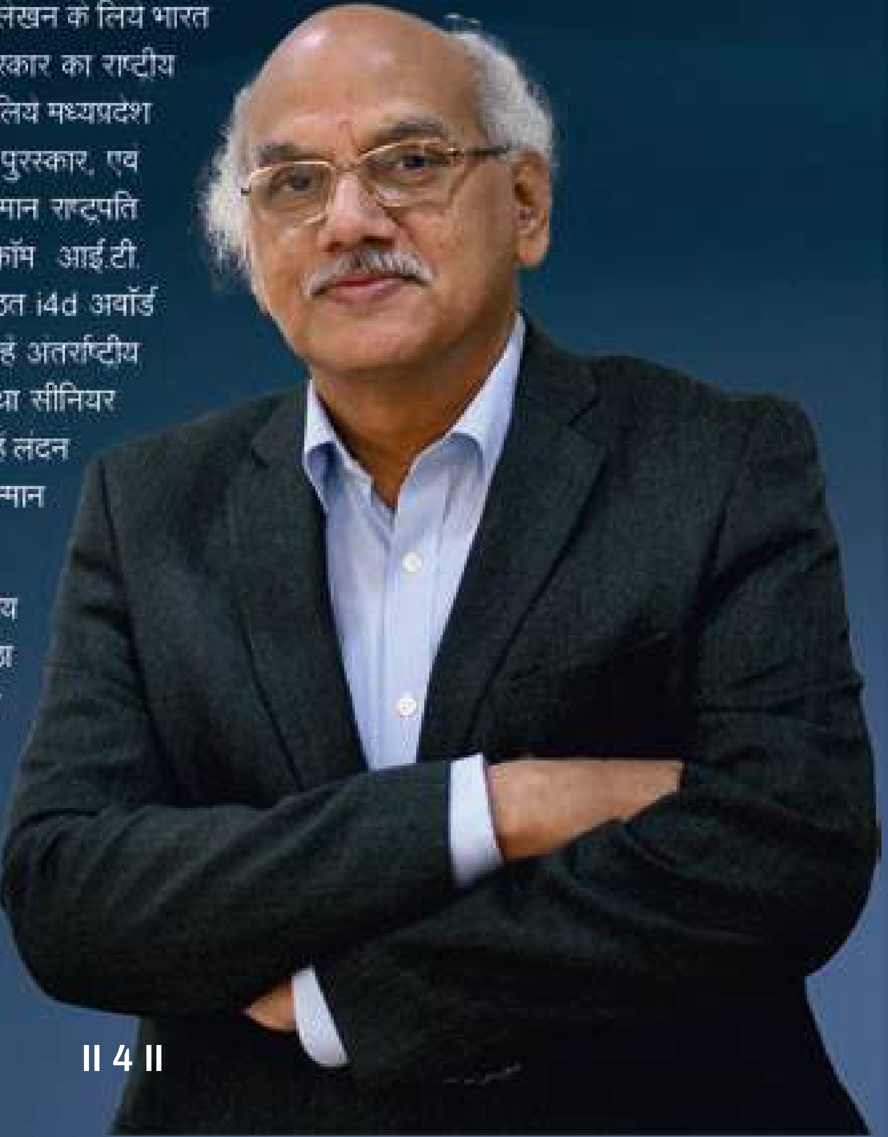

उनके द्वारा स्थापित 'विश्वरंग' अंतरराष्ट्रीय साहित्य और कला महोत्सव अब वैश्विक प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुका है और अब उसमें 70 देश शामिल हैं।

इसी क्रम में रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीयहिंदी केंद्र की स्थापना भी की गई है जिसके 35 देश सदस्य हैं।

संतोष चौबे
कवि, कथाकार, उपन्यासकार :

कवि, कथाकार, उपन्यासकार संतोष चौबे हिंदी साहित्य के उन दुर्लभ साहित्यकारों में से हैं जो साहित्य और विज्ञान, दोनों ही क्षेत्रों में में समान रूप से सक्रिय हैं। वह एक राष्ट्रीय स्तर के प्रख्यात लेखक हैं जो पिछले चालीस वर्षों से देश के भीतर और बाहर लगभग सभी रूपों में हिंदी साहित्य में सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं। उनके छह कथा संग्रह, चार उपन्यास और चार काव्य संग्रह प्रकाशित और प्रशंसित हैं। उनकी कहानियों का मंचन भारत भवन और नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली में किया गया है, उन्हें देश के लगभग सभी प्रमुख प्रकाशनों द्वारा लगातार प्रकाशित किया गया है। जर्मन दार्शनिक ई. एफ. शूमाकर का उनके द्वारा हिंदी में अनुवाद किया गया है, जिसे व्यापक स्तर पर पढ़ा और सराहा गया है। उनकी तीन आलोचनात्मक पुस्तकें 'कला की संगत', 'अपने समय में', तथा 'परम्परा और आधुनिकता' प्रकाशित और सम्मानित की गई हैं। उन्होंने वैचारिक गद्य की दो पुस्तकों 'आख्यान का आंतारिक संकट' तथा 'कहानी : स्वप्न और यथार्थ' का भी संपादन किया है।

उन्होंने मध्य प्रदेश के प्रमुख कथाकार, वनमाली (श्री जगन्नाथ प्रसाद चौबे) पर केंद्रित करते हुए दो खंडों में 'वनमाली समग्र' का संपादन किया है। उनके द्वारा संपादित संकलन 'कथा मध्य प्रदेश', जिसमे मध्य प्रदेश के दो सौ से अधिक लेखकों की कहानियों का संकलन है, को राष्ट्रव्यापी मान्यता मिली है। इसी क्रम में उन्होंने 'कथादेश' का संपादन किया है– यह अठारह खंडों में कहानियों का एक संग्रह है, जिसमें देश भर के छह सौ से अधिक लेखकों की रचनाएँ शामिल हैं। उन्होंने भोपाल के 200 लेखकों पर आधारित, चार खंडों में 'कथा भोपाल', छह खंडों में 'विज्ञान कथा कोश', और तीन खंडों में ''विज्ञान कविता कोश'', का संग्रह भी संपादित किया है। वर्तमान में वे 'रंग संवाद', जो भारतीय कला और संस्कृति पर एक अंतर्विषयक पत्रिका है तथावैश्विक संवाद की पत्रिका 'विश्वरंग संवाद' के मुख्य संपादक के रूप में अपना योगदान दे रहे हैं। लोकतांत्रिक मूल्यों की समावेशी पत्रिका 'वनमाली कथा' के वे संरक्षक हैं।

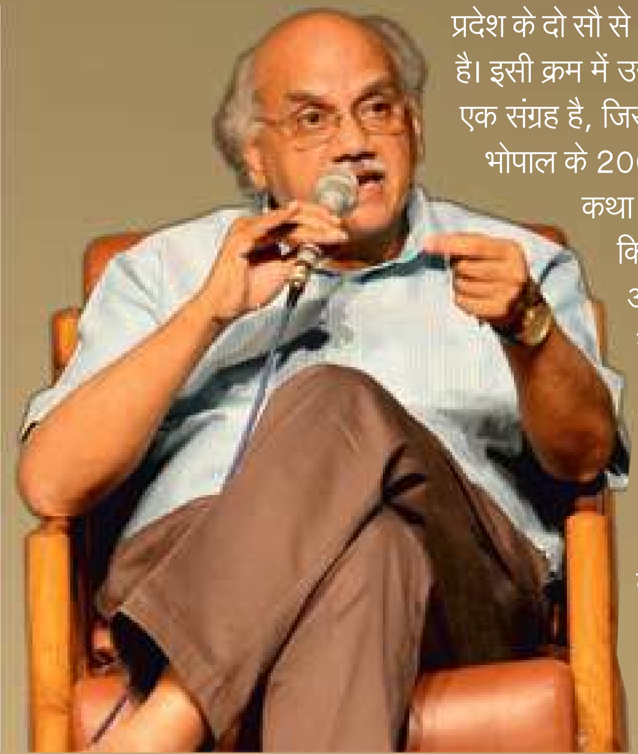

संतोष चौबे के लेखन के बारे में देश के 100 से अधिक सम्मानित लेखकों द्वारा व्यक्त विचार, टिप्पणियां और चर्चाएं पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हुई हैं– संगत, संवाद, सृजन और सहमत, जो उनकी रचनाओं की व्यापक गहराई और प्रभाव को सामने लाती हैं। उनकी कृतियों का

आना जब मेरे अच्छे दिन हों

आना
जब मेरे अच्छे दिन हों।

जब दिल में
निष्कपट ज्योति की तरह
जलती हो
तुम्हारी क्षीण याद
और नीली लौ की तरह
कभी-कभी
चुभती हो इच्छा।

जब मन के
अछूते कोने में
सहेजे तुम्हारे चित्र पर
चढ़ी न हो
धूल की परत
आना जैसे बारिश में अचानक
आ जाये
कोई अच्छी-सी पुस्तक हाथ
या कि गर्मी में
छत पर सोते हुए
दिखे कोई अच्छा-सा सपना।

– घर–बाहर संग्रह से

अनुवाद अंग्रेजी, मलयालम, उर्दू के साथ–साथ कई अन्य भाषाओं में तथा रूसी और जर्मन जैसी विदेशी भाषाओं में भी किया गया है।

लेखन के साथ–साथ संतोष चौबे पिछले तीस वर्षों से हिंदी साहित्य को लोकप्रिय बनाने के लिए लगातार काम कर रहे हैं। उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों में हिंदी साहित्य के लिए वनमाली कथा पुरस्कार की स्थापना, देश के 114 से अधिक कस्बों और शहरों में वनमाली सृजन केंद्रों की स्थापना, तथा वैश्विक स्तर पर विश्वरंग – अंतर्राष्ट्रीय साहित्य और कला समारोह' का आयोजन शामिल है, जिसने अंतरराष्ट्रीय पहचान हासिल की है और जिसके अब 70 देश सदस्य हैं। ऑडियो–वीडियो प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ, उन्होंने हिंदी कविता को 'कवितायात्रा'' के रूप में बड़े पैमाने पर नाट्य स्वरुप में प्रस्तुत करने का काम किया है।

संतोष चौबे ने केंद्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक आयोजनों, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन आदि में सक्रिय रूप से भाग लिया है। हाल ही में, उन्होंने विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के स्थापना दिवस समारोह में भाग लिया, जहाँ उन्होंने मॉरीशस के राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री के साथ मंच साझा किया।

उन्हें मध्य प्रदेश साहित्य परिषद द्वारा कविता संग्रह 'कहीं और सच होंगे सपने'' के लिए दुष्यंत कुमार पुरस्कार, 'कला की संगत'' के लिए स्पंदन आलोचना पुरस्कार, 'मास्को डायरी'' के अनुवाद के लिए हजारीलाल रघुवंशी पुरस्कार और मध्य

प्रदेश राष्ट्रभाषा समिति द्वारा उनके उपन्यास 'जलतरंग'' के लिए शैलेश मटियानी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उन्हें उनके समग्र साहित्यिक योगदान के लिए इंटरनेशनल वैली ऑफ वर्ड्स अवार्ड, राष्ट्रीय दुष्यंत अलंकरण, डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन पुरस्कार और अभिनव शब्द शिल्पी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। हिंदी साहित्य में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें लंदन में 'वातायन यू.के. अंतरराष्ट्रीय शिखर सम्मान' तथा पेरिस में 'भारत गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया है। अपने वैज्ञानिक लेखन के लिए उन्हें भारत सरकार का मेघनाद साहा पुरस्कार, भारत सरकार का राष्ट्रीय विज्ञान प्रोत्साहन पुरस्कार, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी का डॉ. शंकरदयाल शर्मा पुरस्कार तथा एम्प्री का श्रेष्ठ विज्ञान संचारक पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने और भारतीय कला और संस्कृति को एक वैश्विक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से श्री संतोष चौबे द्वारा वर्ष 2019 में विश्वरंग – अंतर्राष्ट्रीय साहित्य और कला महोत्सव का शुभारंभ किया गया था। इसे भारतीय कला और संस्कृति को एक गतिशील मंच प्रदान करने के लिए बनाया गया था जहाँ विभिन्न पृष्ठभूमि के कलाकार अपनी अनूठी प्रतिभा, कला और दृष्टिकोण को प्रदर्शित करने के लिए एक साथ आ सकते हैं।

इस आयोजन के माध्यम से श्री चौबे ने कलाकारों के मध्य आदान–प्रदान और संवाद के अवसर पैदा किए, बाधाओं को तोड़कर कला समुदायों के बीच एकता की भावना को बढ़ावा दिया। हमारी भिन्नताओं और हमारी साझा मानवतावादी संस्कृति की समृद्ध विरासत पर प्रकाश डालते हुए, विश्वरंग ने सहयोग, रचनात्मकता और पारस्परिक सम्मान को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कविता संगीत के पास जाती है और संगीत कविता के पास। कहानी नाटक के पास जाती है और नाटक कहानी के पास। कविता कहानी के पास भी जा सकती है और कहानी चित्रकला से भी प्रभाव ग्रहण कर सकती है। विधाओं के बीच ये आवाजाही मुझे बहुत आकर्षित करती है और एक हद तक आवश्यक भी लगती है। हमें अपनी आलोचना में इस आवाजाही को भी चिन्हित कर सकना चाहिये क्योंकि अब पुरानी तरह की विभाजक रेखायें नहीं रहीं और उन्मुक्त संवाद सभी कलाओं में जारी है।

अपने समय में, से

संतोष चौबे

प्रकाशित रचनाए : साहित्य

कथा संग्रह :

- हल्के रंग की कमीज़
- रेस्तरां में दोपहर
- प्रतिनिधि कहानियाँ
- बीच प्रेम में गाँधी

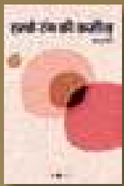
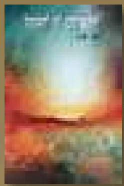
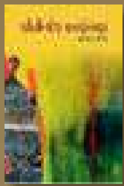

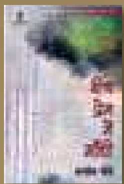
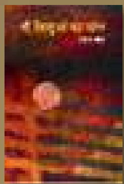
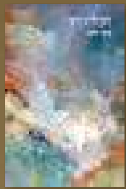
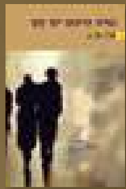
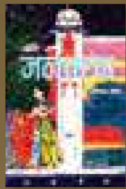
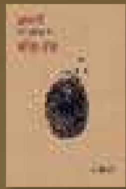

- नौ बिन्दुओं का खेल
- मगर शेक्सपियर को याद रखना
- ग़रीब नवाज़

उपन्यास :

- राग केदार
- क्या पता कॉमरेड मोहन
- जलतरंग (मध्य प्रदेश, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और इंटरनेशनल वैली ऑफ वड्र्स अवार्ड द्वारा शैलेश मटियानी अवार्ड से सम्मानित)
- सपनों की दुनिया में ब्लैक होल'' (द्राक्षा रत्न अलंकरण से सम्मानित)

“ संतोष की कहानियों में जो केन्द्रीय तत्त्व है, वह दृश्य है। कहानी पढ़ते-पढ़ते भी आप महसूस कर सकते हैं कि बहुत सारे विजुअल्स एक के बाद एक आपके दिमाग में बनते हैं। आपकी आँखों के सामने बनते हैं, इसलिए तमाम जो महत्त्वपूर्ण कहानियाँ संतोष की हैं, उसमें बहुत ज्यादा विजुअल्स का या बहुत ज्यादा दृश्यों का इस्तेमाल है और वहाँ जो स्थितियां एक के बाद एक बदलती हैं, उसमें स्वगत भी हैं और संवाद भी सन्निहित है और उसमें नरेशन कम ही हैं जो बिना सूत्रधार के हो सकता है।

-- राजेश जोशी

अनुवाद :

- भ्रमित आदमी के लिए एक क़िताब (गांधीवादी दार्शनिक ई.एफ. शूमाकर द्वारा लिखित "गाइड फॉर द परप्लेक्सड" पुस्तक का हिंदी अनुवाद)

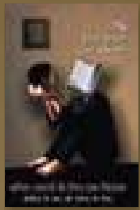

कविता संग्रह :

- ताजा हवा की खोज में (मध्य प्रदेश साहित्य परिषद द्वारा दुष्यंत कुमार पुरस्कार से सम्मानित)
- इस अ–कवि समय में
- कोना धरती का
- घर बाहर

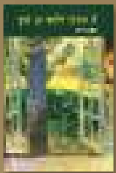
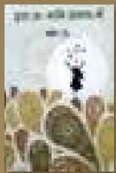
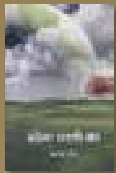
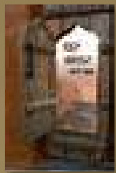

आलोचना :

- कला की संगत (स्पंदन आलोचना सम्मान से सम्मानित)
- अपने समय में
- आख्यान का आंतरिक संकट
- कहानी : स्वप्न और यथार्थ
- उपन्यास की नई परम्परा
- परम्परा और आधुनिकता
- कहानी का रास्ता

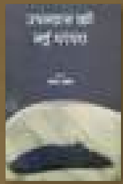
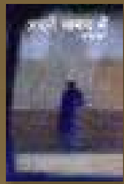
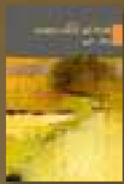
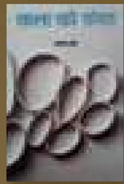

संपादन :

- वनमाली समग्र : सृजन
- वनमाली समग्र : स्मृति
- सम्पूर्ण कहानियां : जगन्नाथ प्रसाद चौबे "वनमाली"
- अन्तरराष्ट्रीय विश्व कविता संचयन
- परम्परा और परिवेश

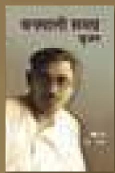

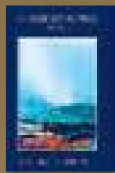

- जर्नी इन टाइम (खंड– I)
- जर्नी इन टाइम (खंड–II)

श्री माथुर चतुर्वेदी समाज का वृहद इतिहास

- खंड 1 – उद्भव और विकास
- खंड 2 – माथुर चतुर्वेदियों के मुख्य गांव
- खंड 3 – माथुर चतुर्वेदियों के अन्य गांव और शहर

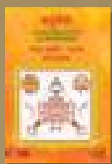

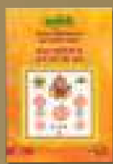
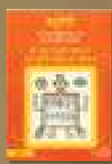

- खंड 4 – श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा और चतुर्वेदी चंद्रिका का इतिहास
- खंड 5 – लोक संस्कृति और परंपरा (भाग 1)
- खंड 6 – लोक संस्कृति और परंपरा (भाग 2)
- खंड 7 – वैदिक विवाह

- खंड 8 – होली : जीवन में बहती रसधार
- खंड 9 – भाषा, साहित्य और कविता
- खंड 10 – आधुनिक समय में चतुर्वेदी (भाग 1)
- खंड 11 – आधुनिक समय में चतुर्वेदी (भाग 2)
- खंड 12 –आधुनिक समय में चतुर्वेदी (भाग 3)

संतोष चौबे के लेखन पर पुस्तकें :

(इन पुस्तकों में देश के 100 से अधिक प्रसिद्ध लेखकों की संतोष चौबे की साहित्यिक कृतियों पर टिप्पणियां और राय शामिल हैं)

- संगत : मोहन सगोरिया द्वारा संपादित (उपन्यास 'जलतरंग' की आलोचनात्मक समीक्षा)
- संवाद : अरुणेश शुक्ला द्वारा संपादित (उपन्यास 'क्या पता कॉमरेड मोहन' की आलोचनात्मक समीक्षा)
- सृजन : कुणाल सिंह द्वारा संपादित (हिंदी साहित्य में संतोष चौबे के योगदान के आधार पर आयोजित पाँच राष्ट्रीय स्तर के साहित्यिक कार्यक्रमों पर एक रिपोर्ट)
- सहमत : मुकेश वर्मा/कुणाल सिंह द्वारा संपादित ('सपनों की दुनिया में ब्लैक होल' पर केंद्रित चर्चा)

कथा मध्य प्रदेश "दह खण्डों में" :

- खण्ड– 1: कथा विरासत
- खण्ड –2: समकालीन कहानी– 1
- खण्ड –3: समकालीन कहनी –2
- खण्ड –4: समकालीन कहानी –3

- खण्ड –5: युवा कहानी– 1
- खण्ड –6: युवा कहानी–2

कथादेश "अठारह खण्डों में" :

- खण्ड –1 : धरोहर
- खण्ड –2 : प्रेमचन्दोत्तर कहानी– 1
- खण्ड –3 : प्रेमचन्दोत्तर कहानी –2
- खण्ड –4 : नई कहानी– 1
- खण्ड –5 : नई कहानी–2

- खण्ड –6 : साठोत्तरी कहानी– 1
- खण्ड –7 : साठोत्तरी कहानी–2
- खण्ड –8 : समकालीन कहानी– 1

- खण्ड –9 : समकालीन कहानी –2
- खण्ड – 10 : समकालीन कहानी–3
- खण्ड – 11 : समकालीन कहानी –4
- खण्ड – 12 : समकालीन कहानी –5
- खण्ड – 13 : समकालीन कहानी –6
- खण्ड 14 : समकालीन कहानी –7
- खण्ड – 15 : युवा कहानी– 1
- खण्ड – 16 : युवा कहानी–2
- खण्ड – 17 : युवा कहानी–3
- खण्ड – 18 युवा कहानी–4

कथा भोपाल "चार खंडों में"

- खण्ड–1 : कथा भोपाल
- खण्ड–2 : कथा भोपाल
- खण्ड–3 : कथा भोपाल
- खण्ड–4 : कथा भोपाल
- शब्द, ध्वनि और दृश्य (ग्यारह लेखकों से साक्षात्कार)

संपादित पत्रिकाएं :

- रंग संवाद
- विश्व रंग संवाद
- इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिये
- वनमाली वार्ता

संतोष चौबे

श्रेष्ठ विज्ञान संचारक :

संतोष चौबे एक प्रसिद्ध लेखक हैं तथा हिंदी में विज्ञान और तकनीकी विषयों पर अपने विशिष्ट लेखन के लिए जाने जाते हैं। वह प्रसिद्ध विज्ञान लेखक श्री गुणाकर मुले के घनिष्ठ सहयोगी भी रहे हैं।

संतोष चौबे ने सबसे पहले हिंदी में कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी पर लेखन शुरू किया। उनकी पहली पुस्तक 'कंप्यूटर – एक परिचय'', मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा वर्ष 1986 में प्रकाशित की गई थी और इसने देश के सभी हिंदी भाषी क्षेत्रों में बिक्री के रिकॉर्ड स्थापित किए थे। पिछले 35 वर्षों में, उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर, विज्ञान और इलेक्ट्रॉनिक्स पर हिंदी में 50 से अधिक पुस्तकों का लेखन, अनुवाद और संपादन किया है, जिन्हें देश के सभी हिंदी भाषी राज्यों में बड़ी संख्या में छात्रों द्वारा पढ़ा जाता है। मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित उनकी विज्ञान पुस्तकों की विक्रय संख्या लाखों प्रतियों में रही हैं। उनकी पहली पुस्तक 'कंप्यूटर एक परिचय'', 41 संस्करणों में प्रकाशितहो चुकी है। उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित डिप्लोमा और डिग्री पाठ्यक्रमों और सम्बंधित पुस्तकों के निर्माण में भी प्रमुख योगदान दिया है।

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित उनकी कुछ प्रमुख पुस्तकें हैं : कंप्यूटर – एक परिचय (जिसे विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया), बेसिक प्रोग्रामिंग (इलेक्ट्रॉनिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत), कंप्यूटर आपके लिए

कंप्यूटर पर हिंदी की पहली पुस्तक 'कंप्यूटर एक परिचय' के लिए
डॉ. के. आर. नारायणन से मेघनाद साहा पुरस्कार प्राप्त करते हुए

भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से
भारतीय नवाचार पुरस्कार प्राप्त करते हुए

(बच्चों के लिए, 6 खंडों में), वर्ड प्रोसेसिंग, सिस्टम एनालिसिस और डिजाइन, डी–बेस–ष्प्प, इलेक्ट्रॉनिक सर्किट, कंप्यूटर से परिचय (भाग – 1 और 2, बीसीए पाठ्यक्रम के लिए), कंप्यूटर एप्लिकेशन (भाग – 1 और 2, बीसीए पाठ्यक्रम के लिए), कंप्यूटर वर्ल्ड (तीन खंडों में, लोकप्रिय विज्ञान) और अन्य पुस्तकें, जिसकी विस्तृत सूची नीचे दी गई है। उनका लेखन कार्य जो 1985–86 से शुरू हुआ था, पिछले 40 वर्षों से निरंतर जारी है और वे लगातार हिंदी में विज्ञान और तकनीकी लेखन के संग्रह को समृद्ध कर रहे हैं।

संतोष चौबे ने हिंदी में लोकप्रिय विज्ञान विषयों पर लेखन और सम्पादन में भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने 50 से अधिक लोकप्रिय विज्ञान पुस्तकों की एक श्रृंखला लिखी और संपादित की है जिसमें महासागर : फाउंडेशन ऑफ लाइफ, कैमिस्ट्री इन डेली लाइफ, क्लाइमेट चेंज, अल्टरनेटिव एनर्जी, ग्लोबल वार्मिंग, ई–वेस्ट मैनेजमेंट, बायोडायवर्सिटी जैसे विषय शामिल हैं। इस प्रयास को आगे बढ़ाते हुए, उन्होंने हिंदी में 6 खंडों में विज्ञान कथा संग्रह और 3 खंडों में विज्ञान कविता संग्रह का भी संपादन किया है, जो हिंदी में अपनी तरह का पहला काम है।

हिंदी में विज्ञान लेखन और संपादन का तीसरा आयाम इलेक्ट्रॉनिक्स और कंप्यूटर का क्षेत्र है। पिछले 35 वर्षों से देश की इकलौती हिंदी पत्रिका 'इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिये' का लगातार संपादन उनके द्वारा किया जा रहा है, जिसमें उनके अपने 100 से अधिक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। इस पत्रिका के विशेषांक– अंतरिक्ष विज्ञान, परमाणु विज्ञान, भारतीय वैज्ञानिक परंपरा और दूरसंचार के साथ–साथ भारतीय वैज्ञानिक जैसे विषयों पर प्रकाशित हुए हैं, जिससे यह वर्तमान में हिंदी में सबसे प्रतिष्ठित विज्ञान पत्रिका बन गई है। संलग्न पत्रिका के हाल में प्रकाशित विशेषांकों की एक झलक यहां देखी जा सकती है।

लोकप्रिय विज्ञान सीरीज अनुसृजन सम्मान समारोह में सम्मानित अतिथियों के सान्निध्य में

प्रिंट माध्यम में विज्ञान पर हिंदी में लिखने के साथ–साथ उन्होंने ऑडियो वीडियो प्रौद्योगिकी के आगमन के उपरान्त, रेडियो के लिए भी लिखा तथा रेडियो प्रसारण के लिए 52 एपिसोड में विज्ञान के नवीनतम विषयों पर केंद्रित विज्ञान यात्रा का निर्माण किया। विज्ञान लेखन के साथ–साथ वे विज्ञान और प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने के कार्य में सतत प्रयासरत रहे हैं इसके लिए उन्होंने देश भर में आईटी यात्राओं का आयोजन किया है। पिछले तीस वर्षो से वह इन यात्राओं के लिए लिख रहे हैं, पोस्टर प्रदर्शनियों का आयोजन कर रहे हैं, विज्ञान नाटकों का निर्माण कर रहे हैं, पुस्तक यात्रा का आयोजन कर रहे हैं। आईसेक्ट के सभी विश्वविद्यालयों में उन्होंने सी.वी. रमन सेंटर फॉर साइंस कम्युनिकेशन की स्थापना की है जो हिंदी और पारंपरिक भारतीय ज्ञान पद्धति को अपनाते हुए विज्ञान के शिक्षण पर विशेष रूप से कार्य कर रहे हैं।

विज्ञान के क्षेत्र में भी उन्हें अनेक पुरस्कार एवं सम्मान भी मिले हैं– मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा 'डॉ. शंकरदयाल शर्मा सम्मान' भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा 'मेघनाद साहा पुरस्कार'; इंडियन इनोवेशन अवार्ड–2005 और नैसकॉम आईटी इनोवेशन अवार्ड–2006, जोकि राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम द्वारा दिए गए थे, भारत सरकार का नेशनल ई–गवर्नेस अवार्ड तथा डेवलपमेंट के लिए इंडियन फोरम का प्रतिष्ठित आईटी अवार्ड। भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग द्वारा 'बेसिक प्रोग्रामिंग' पुस्तक को पहला पुरस्कार दिया गया था, साथ ही संतोष चौबे द्वारा संपादित देश की सबसे प्रतिष्ठित विज्ञान पत्रिका 'इलेक्ट्रोनिकी आपके लिये' को राष्ट्रीय राजभाषा शील्ड पुरस्कार, भारतेंदु पुरस्कार, रामेश्वर गुरु पुरस्कार और सरस्वत सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। वह पिछले 33 वर्षो से इस पत्रिका को नियमित रूप से संपादित और प्रकाशित कर रहे हैं, यह हिंदी में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी पर देश की पहली पत्रिका है। विज्ञान के क्षेत्र में उनको प्राप्त कुछ चयनित पुरस्कारों और सम्मानों की सूची यहां दी गई है।

विज्ञान पर्व के अवसर पर उद्बोधन देते हुये संतोष चौबे

सुपरनोवा के रहस्य के लोकार्पण के अवसर पर देवेन्द्र मेवाड़ी के साथ संतोष चौबे

प्रकाशित कार्य : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

- कंप्यूटर एक परिचय (1986), विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत।
- बेसिक प्रोग्रामिंग (1987) इलेक्ट्रॉनिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत।
- कंप्यूटर एपलीकेशन (लोकप्रिय विज्ञान पुस्तक) (1987)
- शब्द संसाधन (1988)
- प्राणाली विश्लेषण एवं डिजाइन (1987)
- डी – बेस III (1989)
- इलेक्ट्रॉनिक परिपथ (1989)
- कंप्यूटर परिचय भाग – 1 (2000) (बीसीए पाठ्यक्रम के लिए)
- कंप्यूटर परिचय भाग – 2 (2001) (बीसीए पाठ्यक्रम के लिए)
- कंप्यूटर अनुप्रयोग भाग – 1 (2001) (बीसीए पाठ्यक्रम के लिए)
- कंप्यूटर अनुप्रयोग भाग – 2 (2001) (बीसीए पाठ्यक्रम के लिए)
- कंप्यूटर की दुनिया – 1 (2002)
- कंप्यूटर की दुनिया – 2 (2002)
- कंप्यूटर की दुनिया – 3 (2002)
- कंप्यूटर आपके लिये– 1 (2002)
- कंप्यूटर आपके लिये– 2 (2002)
- कम्प्यूटर आपके लिये– 3 (2002)

विज्ञान नाटक अनुवाद :

- गैलीलियो
- सुकरात

हिंदी में लोकप्रिय विज्ञान पुस्तके : लेखन/संपादन

- भोज वैटलैंड : भोपाल ताल
- महासागर : जीवन के आधार
- सूक्ष्म जीव विज्ञान
- भारत में विज्ञान एवं विज्ञान संचार की परम्परा
- सेहत और हम
- रसोई विज्ञान
- ह्यूमन ट्रांसमिशन एवं विज्ञान कथाएं
- बायो इन्फार्मेटिक्स
- मध्यप्रदेश की विज्ञान संचार यात्रा
- हिंदी में विज्ञान लेखन : भूत, वर्तामान एवं भविष्य
- दैनिक जीवन मे रसायन
- जलवायु परिवर्तन
- ग्रीन बेबी
- फोरेंसिक विज्ञान
- सर्वशास्त्र शिरोमणि गणित
- आइये लाइनक्स सीखें
- हम क्या समझते हैं
- सौन्दर्य प्रसाधनों का रसायन
- प्रदूषण जनित रोग
- भोपाल के पक्षी
- पर्यावरण और मानव जीवन
- बच्चों के लिये विज्ञान मॉडल
- खनिज और मानव
- भारत का अन्तरिक्ष कार्यक्रम
- जल संरक्षण
- भूमि संरक्षण
- पर्यावरण : दशा एवम दिशा
- वैकल्पिक ऊर्जा के स्रोत
- प्राचीन भारत में वैज्ञनिक चिंतन
- इलेक्ट्रॉनिकी आधारित सामरिक सुरक्षा तकनीक
- जैव विविधता संरक्षण
- दूर संचार
- भौतिकी की विकास यात्रा
- नैनोटेक्नोलॉजी : छिपी संभावनाएं
- हमारे दैनिक जीवन में अन्तरिक्ष
- वैश्विक तापन
- ई–वेस्ट प्रबंधन
- न्युट्रीन की दुनिया
- घर–घर में विज्ञान
- ऊतक सम्वर्धन
- ब्रहमाण्ड की उत्पत्ति
- हमारे प्रेरणा स्त्रोत भारतीय वैज्ञानिक
- महासागर बोलते हैं

हिंदी में विज्ञान कथा संग्रह और विज्ञान कविता संग्रह का संपादन :

- सुपरनोवा का रहस्य (हिंदी की श्रेष्ठ विज्ञान कथाएं)
- विज्ञान कथा कोश–1 (विश्व की चुनिन्दा विज्ञान कथाएं)
- विज्ञान कथा कोश–2 (भारतीय भाषाओं की विज्ञान कथाएं)
- विज्ञान कथा कोश–3 (बाल विज्ञान कथाएं)
- विज्ञान कथा कोश–4 (भारतीय परिदृश्य – 1)
- विज्ञान कथा कोश–5 (भारतीय परिदृश्य –2)
- विज्ञान कथा कोश–6 (विज्ञान कथाएं – 2000 – 2010)
- विज्ञान कथा कोश–7 (विज्ञान कथाएँ– 2010 – 2020)
- विज्ञान कविता कोश–1 (1857 – 1947 की विज्ञान कवितायें)
- विज्ञान कविता कोश–2 (1948 – 1959 की विज्ञान कवितायें)
- विज्ञान कविता कोश–3 (1960 – 2020 की विज्ञान कवितायें)
- विज्ञान कविता कोश–4 (विज्ञान संचारक, प्रवासी साहित्यकार और क्षणिक विज्ञान कवितायें)

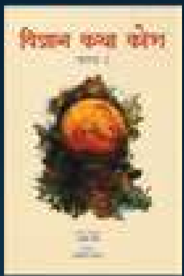
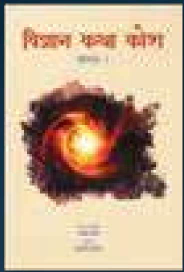
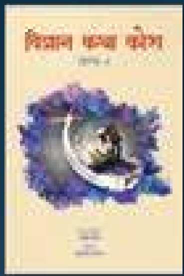

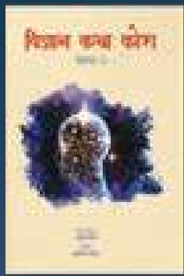
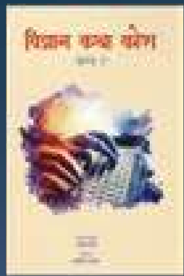

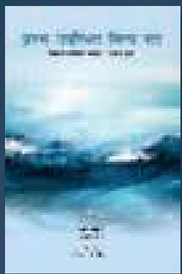
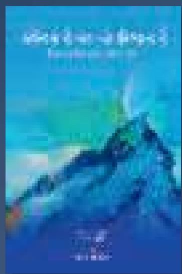

इलेक्ट्रॉनिकी – आपके लिए के विशेषांक

- अल्बर्ट आइंस्टीन विशेषांक
- महिला एवं सूचना तकनीक
- पर्यावरण एवं सूचना तकनीक
- मल्टीमीडिया एवं शिक्षा
- स्वास्थ्य एवं सूचना तकनीक
- अपराध एवं साइबर सुरक्षा
- भारत में अन्तरिक्ष विज्ञान
- ई–गवर्नेंस विशेषांक
- ई– प्रकाशन विशेषांक
- हिंदी एवं सूचना तकनीक
- क्लाउड कम्प्यूटिंग
- कृत्रिम बुद्धिमता विशेषांक
- अक्षय ऊर्जा विशेषांक
- भारतीय विज्ञान परम्परा
- स्टीफन हॉकिंग विशेषांक
- ई–वेस्ट प्रबन्धन
- जैव विविधिता विशेषांक
- नैनो टेक्नोलॉजी विशेषांक
- वायरस विशेषांक
- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम विशेषांक

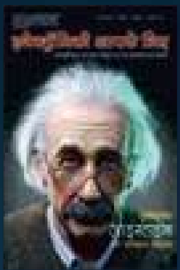

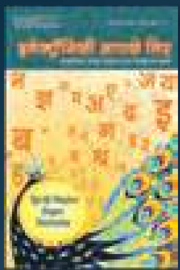
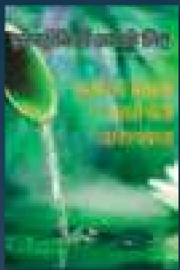

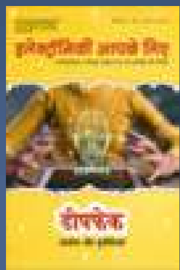

आई. टी. यात्रा, मध्यप्रदेश

विज्ञान यात्रा, मध्यप्रदेश

सूचना प्रौद्योगिकी यात्रा, मध्यप्रदेश

संतोष चौबे

देश के अग्रणी सामाजिक उद्यमी :

संतोष चौबे, एक दूरदर्शी और सामाजिक उद्यमी के रूप में, सामाजिक उद्यमिता, शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से भारत के ग्रामीण, पिछड़े, आदिवासी और वामपंथी अतिवाद से प्रभावित छोटे शहरों, जिलों, ब्लॉकों और पंचायतों में रहने वाले लाखों लोगों को उन्नति की राह पर लाकर उनका जीवन बदलने के लिए चार दशकों से अधिक समय से निरंतर प्रयासरत हैं। आईसेक्ट के अध्यक्ष और पांच विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति के रूप में, सामाजिक उद्यमिता के माध्यम से सामाजिक कार्यों द्वारा सामाजिक उत्थान एवं विकास का एक नया रोल मॉडल उनके द्वारा विकसित किया गया है।

एनआईटी, भोपाल से इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त करने के बाद उनका चयन भारत की प्रतिष्ठित सेवाओं – अखिल भारतीय सिविल सेवा तथा भारतीय इंजीनियरिंग सेवा के लिए भी हुआ था लेकिन इन शीर्ष सेवाओं में जाने के स्थान पर, उन्होंने शहरी और ग्रामीण भारत के बीच मौजूद डिजिटल अंतर को पाटने के उद्देश्य से 1985 में आईसेक्ट (ऑल इंडिया सोसाइटी फॉर इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कंप्यूटर टेक्नोलॉजी) की स्थापना की। आईसेक्ट को वर्तमान में भारत के सबसे बड़े सामाजिक उद्यमों में से एक होने का गौरव प्राप्त है।

सामाजिक उद्यमिता की उनकी इस यात्रा का मूल उद्देश्य ग्रामीण, आदिवासी और अर्ध शहरी भारत पर ध्यान केंद्रित करते हुए, नवाचार तथा वैश्विक दूर दृष्टि एवं स्थानीय कार्यकलापों द्वारा, समावेशी समाज का निर्माण करना है। इस यात्रा में उन्होंने स्किल इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, शिक्षा, कला और संस्कृति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए अटल इनक्यूबेशन सेंटर, 114 स्थानों पर स्थानीय संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण के लिए वनमाली सृजन केंद्रों की स्थापना की है।

कौशल विकास

अर्ध-शहरी और ग्रामीण भारत में रोजगार सृजन की कुंजी है.

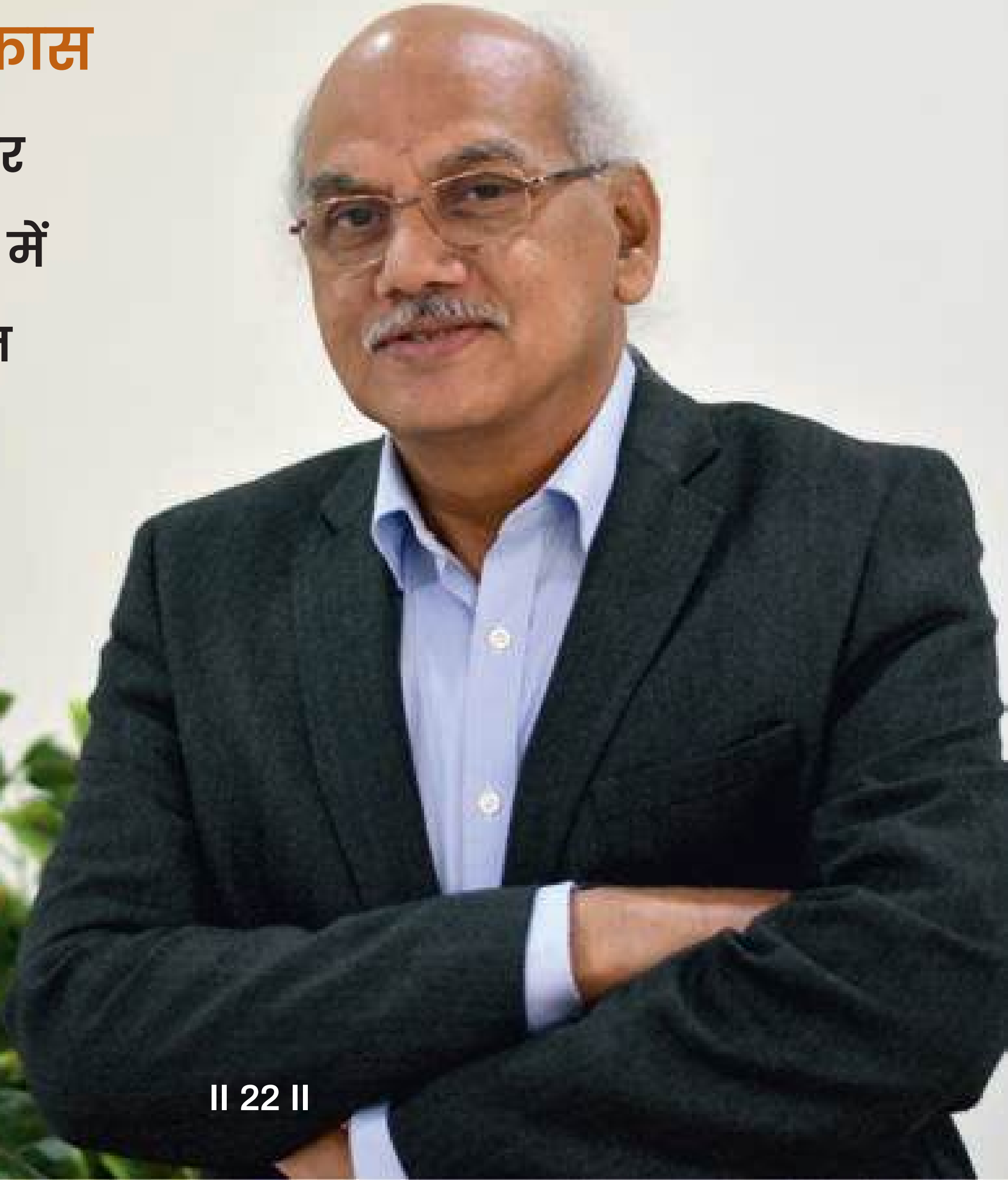

उन्होंने भारत, भारतीयता और भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए, टैगोर इंटरनेशनल सेंटर की स्थापना की है जो कि 70 से अधिक देशों के नेटवर्क को इसके लिए मंच प्रदान करता है। उनके द्वारा विज्ञान और साहित्य पर 50 से अधिक पुरस्कृत पुस्तकों का लेखन एवं सम्पादन भी किया गया है।

संतोष चौबे ने शिक्षा, कौशल विकास प्रशिक्षण, कला और संस्कृति के सभी प्रमुख क्षेत्रों में आईसेक्ट द्वारा की गई पहल का नेतृत्व किया है। आईसेक्ट इंडिया आज 28 राज्यों, 6 केंद्र शासित प्रदेशों में फैले 58,000 से अधिक ग्रामीण केंद्रों के नेटवर्क के माध्यम से कौशल विकास प्रशिक्षण और आईसीटी आधारित व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करता है ये केंद्र 650 जिलों, 3200 ब्लॉक और 11,000 पंचायतों तक अपनी पहुँच रखते हैं। प्रशिक्षित ग्रामीण उद्यमियों द्वारा स्थापित इन केंद्रों ने अब तक दो मिलियन युवाओं को आधुनिक समय के लिए आवश्यक कौशल प्रदान किए हैं, एक करोड़ जन धन खाते खुलवाए हैं और 1 करोड़ से अधिक आधार पहचान बनाये हैं। आईसेक्ट इंडिया के 8000 से अधिक केंद्र, ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन सेवाएँ प्रदान करते हैं। हिंदी और भारतीय भाषाओं में प्रशिक्षण सामग्री बनाने और ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से रोजगार प्रदान करने के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास भी किए गए हैं। आईसेक्ट प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने और रोजगार प्रदान करने के लिए पिछड़े क्षेत्रों में आईटी और रोजगार यात्राओं का आयोजन करता है। 34 प्रधान मंत्री कौशल केंद्र इस प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वे राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम से राष्ट्रीय नवाचार पुरस्कार के विजेता हैं, एक वरिष्ठ अशोक फेलोशिप अध्येता होने के साथ साथ, विश्व आर्थिक मंच द्वारा स्थापित श्वाब फाउंडेशन सोशल एंटरप्रेन्योर ऑफ द ईयर'' अवार्ड 2010 के विजेता हैं। उनके पेशेवर पुरस्कारों और पुरस्कारों की एक विस्तृत सूची अनुलग्नक 1 16

को अपनाते हुए भारत सरकार ने सामान्य सेवा केंद्रों की स्थापना देश भर

आईसेक्ट कियोस्क पर प्रधानमंत्री जन–धन खाते खुलवाते ग्रामीण जन

आईसेक्ट ग्राहक सेवा केन्द्र पर ग्रामीण जन

आईसेक्ट के केंद्र में प्रशिक्षण प्राप्त करते छात्र

में की थी। संतोष चौबे ने राज्य साक्षरता और सतत शिक्षा संसाधन केंद्र, भोपाल की भी स्थापना की, जिसे 2014 में राष्ट्रपति डॉ. प्रणब मुखर्जी से राष्ट्रीय साक्षरता पुरस्कार राप्त हुआ था।

2005 और 2017 के बीच संतोष चौबे ने रबीन्द्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन, मध्य प्रदेश, डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा, मध्य प्रदेश, डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, वैशाली, बिहार और आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड जैसे पांच विश्वविद्यालयों की स्थापना की, जो ग्रामीण और आदिवासी समुदायों के छात्रों को उनके जीवन को बदलने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं। प्रत्येक विश्वविद्यालय में अटल इन्क्यूबेशन सेंटर, संबंधित जिले में उद्यमी विकास गतिविधियों एवं उद्यमियों को आत्मनिर्भर बनाने में योगदान दे रहा है। संतोष चौबे ने भारतीय शिक्षण मंडल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में भारत में विज्ञान विषय पर एक पाठ्यक्रम भी विकसित किया है। वे विज्ञान भारती एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के साथ भी कात करते रहें हैं।

आईसेक्ट के केंद्र में प्रशिक्षण प्राप्त करते छात्र

आईसेक्ट के केंद्र में प्रशिक्षण प्राप्त करते छात्र

aisectindia
Connecting you to opportunities

41 Years of EMPOWERING INDIA Since 1985

छत्तीसगढ़ की राज्यपाल माननीया अनुसुइया उइके
के साथ रामन लाक कला महोत्सव में

सी. वी. रामन विश्वविद्यालय में दीक्षांत समारोह के अवसर पर
राज्यपाल माननीया आनंदीबेन पटेल के साथ

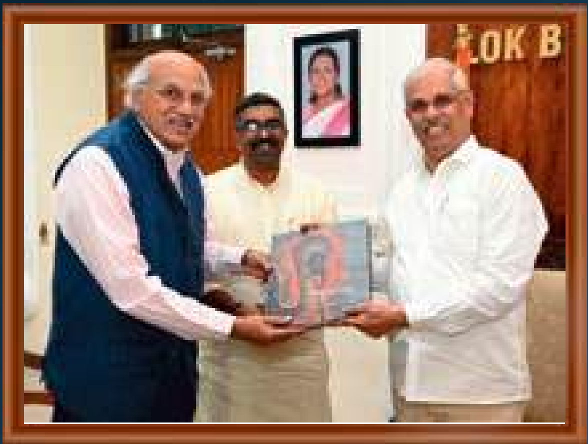

केरल के राज्यपाल माननीय राजेप्द्र आर्लेकर जी के साथ

ओसोका विश्वविद्यालय,जापान में पद्मश्री तोमियो मिजाकामी एवं अन्य

तात्कालीन राज्यपाल झारखंड माननीया द्रौपदी मुर्मू जी के साथ

सी. वी. रामन विश्वविद्यालय में
राज्यपाल माननीय श्री रमेन डेका के साथ

प्रतिष्ठित नालंदा विश्वविद्यालय में सम्मान

प्रख्यात शिक्षाविद श्री मुकुल कानिटकर, राष्ट्रीय संगठन सचिव,
भारतीय शिक्षण मंडल के साथ

पुस्तक यात्रा के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन करते

विश्व रंग 2024, मॉरीशस में अतिथियों संबोधित करते हुये

रमन लोककला महोत्सव, सी. वी. रामन विश्वविद्यालय,
छततीसगढ़ में रामनामी समूह के साथ

निमाड़ लोकरंग सी. वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा

हिंदी क्षेत्रों में विश्वविद्यालयों की स्थापना :

आईसेक्ट ग्रुप ऑफ यूनिवर्सिटीज (एजीयू) की स्थापना का विचार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लोकतंत्रीकरण में गहन विश्वास के विचार से उपजा है। श्री चौबे ने ऐसे संस्थानों के निर्माण की परिकल्पना की, जो न केवल ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि कौशल युक्त मानव समाज का निर्माण भी पोषण करते हैं, नवाचार को बढ़ावा देते हैं, और तेजी से विकसित हो रहे वैश्विक वातावरण में मजबूती से आगे बढ़ने के लिए व्यक्तियों को सशक्त बनाते हैं। शिक्षा और उद्योग के बीच की खाई को पाटने के मिशन के साथ, उन्होंने उन क्षेत्रों में विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय स्थापित करने की शुरुआत की, जिनमें गुणवत्तापूर्ण, किफायती शिक्षा के अवसरों का अभाव था।

उत्कृष्ट सुविधाओं के साथ युवाओं तक पहुंचने के लिए देश के कठिन भौगोलिक क्षेत्रों में आईसेक्ट विश्वविद्यालय समूह की स्थापना की गई है। विश्वविद्यालय का नाम देश के नोबल पुरस्कार विजेताओं के नाम पर रखा गया है। ये विश्वविद्यालय देश के सुदूर कोनों में स्थित हैं– रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन, मध्य प्रदेश, डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, वैशाली, बिहार, डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा मध्य प्रदेश, आईसेक्ट विश्वविद्यालय हजारीबाग, झारखंड तथा स्कोप ग्लोबल स्किल्स यूनिवर्सिटी, भोपाल, मध्य प्रदेश, जो कि समूह का नवीनतम विश्वविद्यालय है।

श्री चौबे की मूल अवधारणा, समावेशी अनुसंधान और नवाचार पर आधारित है। उन्होंने यह महसूस किया कि एक संपन्न अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र, न केवल अकादमिक उन्नति प्रदान करता है बल्कि सामाजिक प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने भौतिक विज्ञान, जल प्रबंधन, नवीकरणीय ऊर्जा, कृषि, आईओटी, महिला उद्यमिता, इन्क्यूबेशन और स्टार्टअप, जनजातीय कला

रबीन्द्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन, मध्य प्रदेश

डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ

स्कोप ग्लोबल स्किल यूनीविर्सटी, भोपाल, मध्य प्रदेश

डॉ सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, खण्डवा, मध्य प्रदेश

डॉ सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, वैशाली, बिहार

आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड

और संस्कृति के क्षेत्र में कोर रिसर्च ग्रुप (सीआरजी) और विभिन्न उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना की है। इसके अतिरिक्त, टैगोर सेंटर फॉर इंटरनेशनल आर्ट्स एंड कल्चर, लोक भाषा केंद्र, प्रवासी भारतीय शोध केंद्र, आईसेक्ट समूह विश्वविद्यालयों में, भौगोलिक और विषय विशेषज्ञता के आधार पर, खोज और अनुप्रयोग आधारित अनुसंधान की संस्कृति को विकसित करने के उद्देश्य से बनाए गए हैं।

नौकरी, बाजार की उभरती मांगों को समझते हुए, श्री चौबे ने सभी औपचारिक डिग्री कार्यक्रमों में अनिवार्य कौशल विकास पाठ्यक्रमों को एकीकृत किया है। इस अनूठे दृष्टिकोण ने यह सुनिश्चित किया कि छात्रों को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ विविध क्षेत्रों में व्यावहारिक विशेषज्ञता भी प्राप्त हो, जिससे उन्हें उद्योगों की गतिशील प्रवृत्ति के अनुसार नौकरी के लिए तैयार और अनुकूल बनाया जा सके।

विश्वविद्यालयों का यह बहुविषयक दृष्टिकोण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और उदार कलाओं को समान महत्व देते हुए एक ऐसा पारिस्थितिक वातावरण छात्रों को उपलब्ध कराते हैं जिससे आईसेक्ट ग्रुप ऑफ यूनिवर्सिटीज (एजीयू) के छात्रों के सर्वांगीण विकास हो सके।

संतोष चौबे, वर्तमान में डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय (बिलासपुर, वैशाली और खंडवा) तथा रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय (रायसेन) के साथ छः विश्वविद्यालयों में कुलाधिपति/कुलाध्यक्ष हैं।

"हम उत्कृष्टता में
विश्वास करते हैं
जिसका अर्थ है कि
व्यक्ति और समग्र रूप से
विश्वविद्यालय दोनों
लगातार ऐसे
परिणामों के लिए
प्रयास करेंगे
जो केवल संतोषजनक
होने के बजाय
अनुकरणीय हों ."

साहित्यक सांस्कृतिक संगठन

वनमाली सृजन पीठ

वनमाली सृजन केन्द्रों के वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन

वनमाली कथा सम्मान में उद्बोधन देते संतोष चौबे

वनमाली कथा सम्मान में प्रभु जोशी जी का स्वागत करतीं डॉ. विनीता चौबे

सुप्रसिद्ध कथाकार शिक्षाविद् तथा विचारक स्वर्गीय जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली' के रचनात्मक योगदान और स्मृति को समर्पित वनमाली सृजन पीठ जिसकी स्थापना संतोष चौबे ने 1990 में की, एक साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा रचनाधर्मी अनुष्ठान है, जो विगत तीस वर्षों से परंपरा तथा आधुनिक आग्रहों के बीच संवाद तैयार करने के लिए सतत सक्रिय है. इन तीस वर्षों में वनमाली सृजन पीठ ने अविस्मरणीय सृजन यात्रा तय की है. यह यात्रा अनवरत जारी है.

साहित्य तथा कलाओं की विभिन्न विधाओं में हो रही सृजना को प्रस्तुत करने के साथ ही उसके प्रति लोकरुचि का सम्मानजनक परिवेश निर्मित करना भी पीठ की प्रवृत्तियों में शामिल है. इस आकांक्षा के चलते रचनाधर्मियों से विमर्श और संवाद स्थापित करने के अलावा यह सृजन पीठ शोध, अन्वेषण, अध्ययन तथा लेखन के नवोन्मेषी प्रयासों तथा सृजनशील प्रतिभाओं को चिन्हित करने और उन्हें अभिव्यक्ति के यथासंभव अवसर उपलब्ध कराने का काम भी करती है. बहुलता का आदर और समावेशी रचनात्मक आचरण हमारी सृजनात्मक गतिशीलता के अभीष्ट है. 'वनमाली सृजन पीठ' पिछले लगभग 40 वर्षों से निम्न लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये काम करती रही है।

- भारत के विभिन्न प्रदेशों में जिला, शहर, ग्राम पंचायतों में वनमाली सृजन केन्द्रों के माध्यम से पुस्तकालयों एवं पाठक मंचों की स्थापना.
- कथा, उपन्यास और आलोचना के साथ ही कविता तथा अन्य साहित्यिक विधाओं पर एकाग्र रचना-पाठ एवं संवाद गोष्ठियों का आयोजन.

वनमाली सम्मान 2026 में सुश्री प्रतिभा राय के साथ

वनमाली कथा सम्मान से सम्मानित रचनाकार

- स्थानीय तथा प्रवासी साहित्यकार कलाकारों के प्रदर्शन–सह व्याख्यान एवं पुस्तक चर्चाएं.
- साहित्य तथा कलाओं के अंतर्सम्बंधों की पड़ताल.
- अग्रज और नई पीढ़ी के सृजकों के बीच रचनात्मक विमर्श एवं संवाद की स्थापना.
- चयनित कलाकारों–साहित्यकारों के मोनोग्राफ का प्रकाशन.
- बच्चों की कलात्मक अभिरुचि को प्रोत्साहन.
- अध्ययन और शोध के अवसरों की उपलब्धता.
- उत्कृष्ट सर्जना का सम्मान.
- पारंपरिक कलारूपों और समकालीन सृजन–संवाद का दस्तावेजीकरण.
- साहित्यिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले शहरों–कस्बों में विभिन्न रचनात्मक आयोजन.
- लोक, शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, सुगम संगीत तथा वृंदगान की प्रस्तुतियां.
- समानधर्मी संस्थाओं के साथ मिलकर रचनात्मक एवं सृजनात्मक गतिविधियों की साझेदारी.
- युवा रचनाकारों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंच प्रदान करना.
- वनमाली राष्ट्रीय कथा सम्मान का आयोजन.
- पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए दूरदराज के अंचलों में पुस्तक यात्राओं का आयोजन.
- 'लेखक से मिलिए' के अंतर्गत लेखकों एवं पुस्तकों पर केंद्रित बातचीत.
- 'कथा यात्रा' एवं 'कविता देश' कार्यक्रमों का आयोजन.
- वनमाली सृजन केन्द्रों द्वारा स्थानीय स्तर पर साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक सरोकारों के विषयों पर रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन.

- भारतीय संस्कृति, कला, साहित्य को बढ़ावा देने के लिए दूरदराज अंचलों में सृजन यात्राओं का आयोजन.
- स्थानीय साहित्यिक, सांस्कृतिक, कला संबंधी धरोहरों एवं पांडुलिपियों के संरक्षण, संवर्धन और दस्तावेजीकरण को प्राथमिकता देना.
- ग्रामीण एवं आदिवासी अंचलों में साहित्यिक और तकनीकी विषयों में शोध व अनुसंधान के कार्यों को विस्तार देना.

वनमाली कथा सम्मान

वनमाली सृजन पीठ हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के विस्तार के लिए लेखनरत साहित्यकारों को विगत तीस वर्षों से प्रतिष्ठित वनमाली राष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित भी कर रहा है। इनमें वनमाली कथाशीर्ष सम्मान, वनमाली राष्ट्रीय कथा सम्मान, वनमाली प्रवासी भारतीय कथा सम्मान, वनमाली विज्ञान कथा सम्मान, वनमाली मध्यप्रदेश कथा सम्मान, वनमाली युवा कथा सम्मान, वनमाली कथा आलोचना सम्मान, वनमाली साहित्यक पत्रिका सम्मान से अलंकृत किया जाता है।

वनमाली सृजन केन्द्र

सुदूर अंचलों, गाँव–कस्बों में कला, साहित्य, संस्कृति, सामाजिक सरोकारों की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड, राजस्थान, गुजरात, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, दिल्ली, उत्तर प्रदेश आदि में 150 से अधिक वनमाली सृजन केंद्रों की स्थापना की गई है.

वनमाली सृजन पीठ एवं सृजन केन्द्रों का विश्वविद्यालयों से समन्वय

देश के सभी वनमाली सृजन पीठ एवं वनमाली सृजन केन्द्रों के रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्यो–गतिविधियों को विस्तार देने एवं सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए आईसेक्ट समूह के विश्वविद्यालयों, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, बिलासपुर,

पुस्तक यात्रा के अवसर पर मा. राज्यपाल म.प्र.,मंगूभाई पटेल को पुस्तकें भेंट करते हुये

कथा मध्यप्रदेश के लोकार्पण के अवसर पर रचनाकार अतिथियों के साथ

वनमाली सृजन केन्द्रों का चतुर्थ राष्ट्रीय सम्मेलन

पुस्तक यात्रा के अवसर पर मा. राज्यपाल म.प्र.,श्री मंगूभाई पटेल को पुस्तकें भेंट करते हुये

खंडवा, वैशाली, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग के साथ संबंधित प्रदेश तथा क्षेत्र विशेष में स्थापित वनमाली सृजन पीठ एवं सृजन केन्द्रों का समन्वय किया गया है. वनमाली सृजन पीठ एवं सृजन केन्द्र साहित्य, कला, संस्कृति, सामाजिक सरोकारों के लिए रचनात्मक कार्यक्रमों के साथ–साथ विभिन्न क्षेत्रों में शोध, अन्वेषण, पांडुलिपियों का संग्रहण, स्थानीय साहित्यिक, सांस्कृतिक धरोहरों के दस्तावेजीकरण के कार्य भी करेंगे.

पुस्तक यात्रा

विश्व रंग के तहत रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, बिलासपुर, खंडवा, वैशाली, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग, वनमाली सृजन पीठ एवं वनमाली सृजन केंद्रों द्वारा पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए दूरदराज के अंचलों में पुस्तक यात्राओं का आयोजन कर हजारों स्थानीय रचनाकारों एवं लाखों युवाओं को रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया है.

कथा मध्यप्रदेश

'कथा मध्यप्रदेश' में हिंदी कहानी की करीब सौ सालों की परंपरा और प्रवृत्तियों को प्रस्तुत किया है. कथा मध्यप्रदेश का प्रकाशन छः वृहद खंडों में किया गया हैं। इसमें अविभाजित मध्यप्रदेश के लगभग दो सौ से अधिक कथाकारों की कहानियों एवं देश भर के तीस से अधिक आलोचकों के विचारोत्तेजक लेख सम्मिलित किए गए हैं. कथा मध्यप्रदेश ने देश भर में व्यापक चर्चा को जन्म दिया है.

कथा देश

लगभग सवा सौ सालों के परिदृश्य में लिखी गई हिंदी कहानियों में से 650 प्रतिनिधि कहानियों को जिल्दबंद करता श्कथादेश श्वृहद कथाकोश 18 खंडों में प्रकाशित किया गया.

इन अट्ठारह खंडों को 'धरोहर', 'प्रेमचंदोत्तर', नयी 'कहानी', 'साठोत्तरी', 'समकालीन कहानी' एवं 'युवा कहानी' के रूप में प्रकाशित किया गया. इनमें उन कहानियों को सम्मिलित किया गया जिन्होंने काल–चेतना के साथ अपना रचनात्मक सामंजस्य

स्थापित करते हुए नवीन सौंदर्याभिरुचियों का सृजन किया. साथ ही कहानी की संपूर्ण विकास यात्रा का सांगोपान, रेखांकन व निरीक्षण करते हुए 75 से अधिक आलोचनात्मक आलेख को भी संग्रहित किया गया, जो कि पाठकों की दृष्टिभंगिमा का समुचित निर्देशन करते हैं. कथादेश में इस बार एक नया प्रयोग भी किया गया. इसमें सम्मिलित प्रत्येक कहानी पर एक समकालीन युवा आलोचक की समीक्षात्मक टिप्पणी का समावेश किया गया। इससे कहानी की प्रभवान्विति के निर्धारण में मदद भी मिलती है, साथ ही संकलित कहानी का समकालीन मूल्यांकन भी संभव हो 'कथादेश' के प्रत्येक खंड अलग-अलग होते हुए भी परस्पर संबध्द है. इनका क्रमवार अध्ययन हिंदी कहानी की प्रांजल विरासत का आज के पाठक से अवश्य ही साक्षात करवाता है. इसकी उपयोगिता कहानी के शोधार्थियों के लिए तो है ही कथा-रस के सामान्य आस्वादनों के लिए भी है.

कथा भोपाल

वनमाली सृजन पीठ एवं आईसेक्ट पब्लिकेशन द्वारा देश की सांस्कृतिक राजधानी झीलों की नगरी भोपाल के लगभग 187 कथाकारों की कहानियों को संग्रहित कर महत्वपूर्ण कथाकोश 'कथा भोपाल' के रूप में प्रकाशन किया गया है. कथा भोपाल को चार वृहद खंडों में प्रकाशित किया गया है. किसी एक शहर को केन्द्र में रखकर कथाकोश के निर्माण एवं प्रकाशन की दृष्टि से यह एक विरल शोधपरक कार्य संपादित हुआ है.

वनमाली सीरीज : दस कहानियाँ

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के तत्वावधान में हिंदी के वरिष्ठ एवं विख्यात साहित्यकार स्वर्गीय श्री जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली' जी की स्मृति में दिए जाने वाले प्रतिष्ठित 'वनमाली कथा सम्मान' से अलंकृत कथाकारों की महत्वपूर्ण रचनाओं से हिंदी साहित्यानुरागियों को एक बार फिर रू-ब-रू कराने की दृष्टि से 'वनमाली सीरीज' के अंतर्गत 'कथा पुस्तकों' का प्रकाशन 'दस कहानियाँ' के रूप में वनमाली सृजन पीठ एवं आईसेक्ट पब्लिकेशन का अभिनव अभियान है.

वनमाली वार्ता

वनमाली सृजन पीठ, वनमाली सृजन केंद्रों तथा सहयोगी संस्थाओं द्वारा की जा रही रचनात्मक गतिविधियों एवं सृजनात्मक लेखन को साझा करने के लिए 'वनमाली वार्ता' बुलेटिन का प्रकाशन किया गया है.

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

यह विश्वरंग
जिसमें अन्तरमन की उमंग।
भावों अनुभावों की तरंग।
यह विविध कलाओं का प्रसंग।
यह विश्वरंग यह विश्वरंग।।

जिसमें सवेदन की सुगंध।
अनुराग राग के ललित बंध।
मुखरित हर भाषा हर बोली।
शब्दों अर्थों की राँगोली।
अनुभूति भूति अक्षय अभंग।
यह विश्वरंग यह विश्वरंग ।।

"विश्वरंग" भारतीय संस्कृति का वैश्विक मंच

"विश्वरंग" टैगोर अंतरराष्ट्रीय साहित्य और कला महोत्सव की स्थापना :

संतोष चौबे द्वारा 2019 में स्थापित विश्वरंग अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव ने साहित्य, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर एक स्वर्णिम मुकाम बनाया है.

भारत की सांस्कृतिक राजधानी भोपाल में आयोजित विश्व रंग टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव 2019 के प्रथम अद्‌भुत भव्य आयोजन का जिस तरह से पूरे विश्व ने अभिनंदन किया था वह साहित्य, कला, संगीत, संस्कृति, शिक्षा एवं सामाजिक सरोकारों के वैश्विक फलक पर रोशन सितारों की मानिंद सदैव के लिए अविस्मरणीय है.

उल्लेखनीय है कि कोरोना विभीषिका के रूप में सदी की सबसे भीषण त्रासदी के दौरान वर्चुअल प्लेटफार्म पर ऑनलाइन आयोजित विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक महोत्सव 'विश्व रंग 2020 एवं विश्व रंग 2021' की न सिर्फ विश्व के 26 मुल्कों ने मेजबानी की बल्कि 50 से अधिक देशों के हजारों रचनाकारों एवं लाखों–करोड़ों लोगों ने रचनात्मक उपस्थिति दर्ज कराकर विश्व रंग 2020 एवं विश्व रंग 2021 को कई गुना अधिक भव्यता के साथ अद्‌भुत, अकल्पनीय और अविस्मरणीय बना दिया.

यह देश के इतिहास में पहली बार हुआ कि किसी शैक्षिक संस्थान रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय ने डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, आइसेक्ट विश्वविद्यालय, टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केंद्र, वनमाली सृजन पीठ, वनमाली सृजन केंद्रों एवं देश–विदेश की 100 से अधिक सांस्कृतिक संस्थाओं को साथ लेकर साहित्य एवं कला महोत्सव का अद्‌भुत संसार रचा.

देश में आयोजित होने वाले कई अन्य साहित्य उत्सव में अंग्रेजी का प्रभुत्व होता है। वेस्टर्न कल्चर की प्रधानता रहती है. वे महानगरों में एलीट क्लास तक सीमित रहते है. इन उत्सवों के बदले विश्व रंग' ने हिंदी और भारतीय भाषाओं को केंद्रीयता प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य करते

विश्वरंग 2019 के अवसर पर मा. राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी का उद्‌बोधन

विश्वरंग 2019 के अवसर पर मा. कर्ण सिंह का उद्‌बोधन

मा. राज्यपाल म.प्र.,श्री मंगूभाई पटेल को विश्व रंग स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुये

पुस्तक यात्रा के अवसर पर मा. राज्यपाल छत्तीसगढ़.,श्रीमति अनुसुईया उईके

विश्वरंग 2019 उद्घाटन अवसर पर मा. राज्यपाल म.प्र., श्री लालजी टंडन

हुए हिंदी और भारतीय भाषाओं के बीच अपनत्व और परस्पर सम्मान का रिश्ता कायम करने का ऐतिहासिक कार्य किया। साथ ही इस बात को भी विशेष रूप से ध्यान में रखा कि हमारी भाषा को समृद्ध करने के लिए हमारी बोलियों का समृद्ध होना बहुत जरूरी है. अपनी भाषा से अपनी बोलियों को जोड़ना भी बहुत आवश्यक है. इसी को ध्यान में रखते हुए 'विश्व रंग' में हिंदी के साथ उसकी बोलियों–मालवी, बुंदेली, बघेली, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, अवधि आदि के जमीनी रस भरे संवाद को वैश्विक फलक प्रदान किया.

विश्वरंग'', साहित्य, संस्कृति और कला की रचनात्मक दुनिया का एक अनूठा आयोजन है जो इन सबके प्रति रुचि, जिज्ञासा और उत्साह का एक नया वातावरण बनाने की एक पहल है। इस प्रतिष्ठित महोत्सव ने भोपाल, दिल्ली, मुंबई के साथ–साथ मॉरीशस एवं श्रीलंका में 7 संस्करण पूरे कर लिए हैं इसका उद्देश्य हिंदी और भारतीय भाषाओं के बीच वैचारिक संवाद और सांस्कृतिक बातचीत को आरम्भ करना है। साहित्य अकादमी पुरस्कार, पद्म भूषण और पद्मश्री से सम्मानित सौ से अधिक कलाकारों, रचनाकारों और विचारकों के साथ–साथ दुनिया के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों और छात्रों ने विश्वरंग'' में भाग लिया है। इस महोत्सव में दुनिया के उन 70 देशों के प्रतिनिधियों की भागीदारी देखी गई है जहाँ स्कूलों और विश्वविद्यालयों में हिंदी सिखाई जा रही है।

देश और राज्य की कई सरकारी साहित्यिक–सांस्कृतिक पहलों के साथ–साथ अनेक विश्वविद्यालयों और संस्थानों की भागीदारी इस महोत्सव को पूर्णता प्रदान करती है। इस महोत्सव में हिंदी के साथ–साथ अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं के कवियों और लेखकों के साथ–साथ परलैंगिक व्यक्तियों द्वारा रचनाएँ प्रस्तुत की गई। विश्वरंग'' सत्रों में लेखक से मिलें, टैगोर की कला कृतियों की प्रदर्शनी, पुस्तक चर्चा और पुस्तक शुभारंभ आदि इसके अभिन्न अंग हैं। इस महोत्सव में गांधी और टैगोर की विरासत, साहित्य, संस्कृति और कला, शिक्षा, मीडिया और पर्यावरण के परस्पर संबंध जैसे मुद्दों पर संवाद किए गए थे। यह महोत्सव छोटे गांवों और कस्बों से लेकर महानगरीय शहरों और दूरदराज के देशों तक एक संयुक्त

रचनात्मक अभियान के रूप में उभरा है, जिसमें उभरते लेखक और प्रतिष्ठित व्यक्तित्व एक साथ जुड़ गए हैं।

विभिन्न सांस्कृतिक पहलों के साथ, भारत सरकार, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञान पीठ, केंद्रीय भाषा संस्थान, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, सूचना प्रसारण मंत्रालय, भारत भवन, मध्य प्रदेश संस्कृति विभाग, पर्यटन विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा और भोपाल के सभी प्रमुख स्वैच्छिक सांस्कृतिक संगठन विश्वरंग'' की गतिविधियों में सहयोग करते हैं।

पुस्तक यात्रा विश्वरंग'' की एक अनूठी पहल है जो देश के छोटे कस्बों के बच्चों को पढ़ने और किताबें लेने की ललक को फिर से जगाने के लिए आयोजित की जाती है। पिछले वर्ष इस पुस्तक यात्रा ने 100 कस्बों, 500 स्कूलों तक पहुँचने वाले 11 मार्गों पर यात्रा की और देश भर में लगभग 1,00,000 छात्रों तक पहुँची।

समग्रता, राष्ट्रीय और आत्मनिर्भरता श्री संतोष चौबे के कर्मक्षेत्र के तीन प्रमुख स्तंभ हैं। उन्होंने वनमाली सृजन पीठ की स्थापना की है, जो 114 जगहों पर एक बहु–सांस्कृतिक पहल के रूप में कार्यरत है, और संबंधित क्षेत्रों में पारंपरिक कलाओं के संरक्षण और दस्तावेजीकरण के लिए काम कर रहे है। भारत और भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से टैगोर इंटरनेशनल सेंटर फॉर आर्ट एंड कल्चर की स्थापना भी उन्होंने की है। उनकी इस रचनात्मक यात्रा में विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस, साझा संसार, नीदरलैंड, हिंदी से प्यार है, न्यूयॉर्क, वातायन, यूके, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारतीय ज्ञानपीठ और मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन सहयोगी की भूमिका में हैं।

इस प्रकार पिछले 40 वर्षों में संतोष चौबे ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर सामाजिक उद्यमिता, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, हिंदी साहित्य और संस्कृति के क्षेत्रों में एक सहयोगी और समावेशी वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

विश्वरंग में डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन

विश्वरंग में कौशिकी चक्रवर्ती का शास्त्रीय गायन

विश्वरंग में लोक कलाकारों के साथ संतोष चौबे

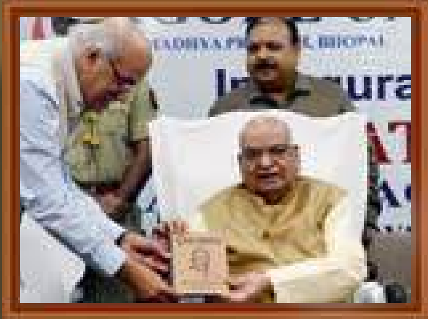

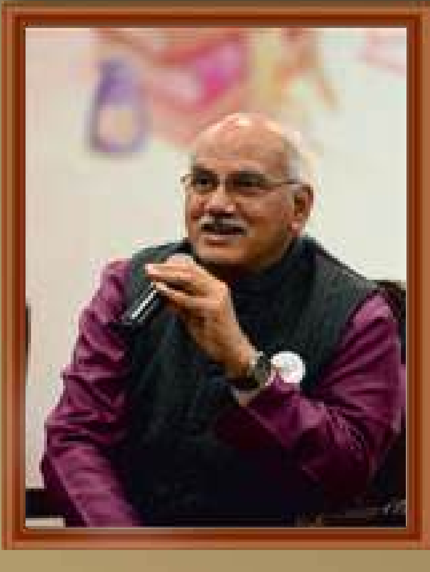

Organised By

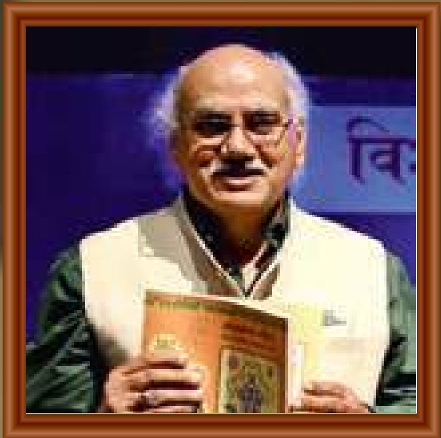

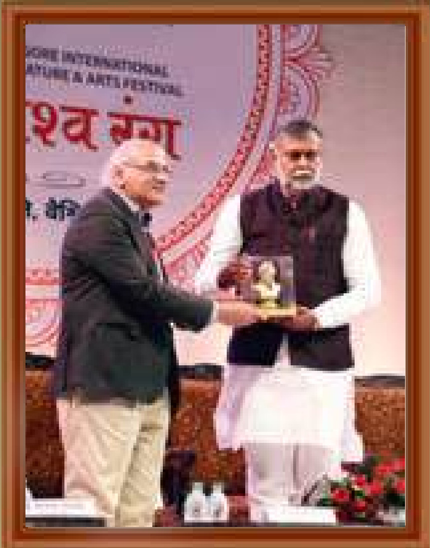

विश्व रंग आरंभ 2025, मुंबई

विश्व रंग श्रीलंका 2025

विश्व रंग भोपाल 2025

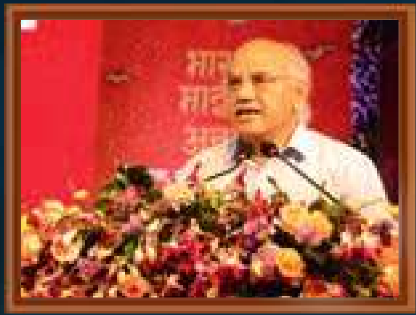

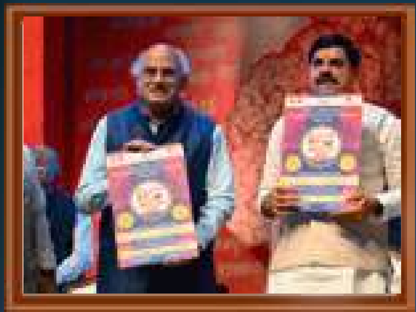

विश्व रंग भोपाल 2025

अभिमत

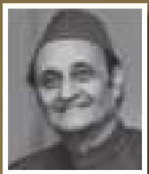

मुझे हर्ष है। हमारी कला–संस्कृति हज़ारों वर्ष से चली आ रही है। इसकी जो आभा है वो शताब्दी दर शताब्दी कायम है। विश्वरंग में भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित करने के लिए जो कार्य हो रहा है, मैं उसका स्वागत करता हूँ। विश्वरंग का विस्तृत कार्यक्रम देखकर मन को हर्ष हुआ कि इसमें बहुत सारे नृत्य भी हैं, संगीत भी है। आपने गुरुदेव के नाम पर विश्वविद्यालय बनाया है। वो एक महान साहित्यकार थे, महान विचारक थे। उनकी ख्याति केवल भारत तक सीमित नहीं है। वे विश्वविख्यात है। मुझे उम्मीद है कि विश्वरंग अपने उद्देश्य में सफल रहेगा। टैगोर की स्मृति के साथ ही अपने समय में कला, साहित्य और संस्कृति के प्रति आप गहरी संलग्नता से काम करते रहेंगे, विश्वरंग इस बात का विश्वास देता है।

– कर्णसिंह, राजनेता–चिंतक

आई एम पोइट फ्रॉम साउथ अफ्रीका। आई एम ऑल्सो–फिल्ममेकर, एक्ट्रेस एण्ड प्रोड्यूसर। फर्स्ट टाइम कमिंग इन इण्डिया। आई एम हेप्पी टू कम हियर। 'विश्वरंग' इज़ वैरी स्पेशल। साउथ अफ्रीका हैज़ ए लार्ज इण्डियन कम्युनिटी। सो द कल्चर ऑफ इण्डियन एंड लिटरेचयर वेरी क्लोज़ टू मी।

– लेबो मशीले, लेखिका, साउथ अफ्रीका

मैं मास्को विश्वविद्यालय में हिन्दी, पंजाबी और कुछ धार्मिक विषय पढ़ाती हूँ। हमारे विद्यार्थी वहाँ शौक से हिन्दी सीख रहे हैं। भारतीय फिल्मों और कलाओं का वहाँ विशेष आकर्षण है। यह प्रेम काफी पुराना और गहरा है। 'विश्वरंग' ने भारत और रशिया के बीच एक नए सांस्कृतिक रिश्ते की शुरुआत की है। मुझे निजी तौर पर यहां आकर बहुत लाभ हुआ।

– लिउडमिला खोखलोवा, प्रोफेसर मास्को विवि, रशिया
(अब पद्मश्री से सम्मानित)

'विश्व रंग' के बारे में दो बातें कहूँगी। 'विश्व रंग' पहला ऐसा आयोजन है मेरे अनुभव में जहाँ मैं विश्व को एक होते हुए देख रही हूँ। सारे आगंतुकों में उत्साह, स्नेह और खुशी का भाव है। भारत से बाहर रहकर एक कथाकार के रूप में हिन्दी के संसार से जुडना एक अलग ही अनुभव है। वनमाली कथा सम्मान समारोह में शामिल होकर मुझे गर्व की अनुभूति हुई।

–सुषम बेदी, कथाकार, अमेरिका

'विश्वरंग' के अप्रतिम महोत्सव ने भारतीय संस्कृति से जुड़े विश्व भर के रचनाकारों को समीप लाने और वैश्विक वैचारिकता के लिए काम करने हेतु उन्हें अधिक प्रतिबद्ध बनाया है। राजस्थानी लोक नृत्यों को अपने परिवार के साथ खुले आकाश के नीचे सीढियों पर बैठ कर देखने का आनंद ही कुछ और था। लोक कलाएँ निश्चय ही हमारे आदिम अहसासों को छूती है।

–धर्मपाल महेन्द्र जैन, साहित्यकार, टोरंटो

अठारह खंडों में कथा ग्रंथ, हिंदी कहानियों का अंग्रेज़ी में अनुवाद, उत्तेजक विचार–विमर्श और लोक कला के रंग प्रसंग... एक उत्सव में कितना कुछ! संतोष चौबे और उनकी पूरी टीम की ऊर्जा और तेजस्विता के लिए विस्मित सद्भाव से भरी हुई हूँ मैं।

– ममता कालिया, कथाकार

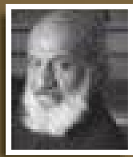

यहाँ पर एक विशेष चीज़ हुई है जिससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ, वह यह है कि जो संवाद और विमर्श यहाँ हुए, वो बहुत ही ऊँचे दर्ज़े के और गम्भीर हैं। प्राय: इस तरह के उत्सवों में खानापूर्ति ज़्यादा होती है, तमाशा ज़्यादा होता है।

– सुधीर चन्द्रा, इतिहासकार

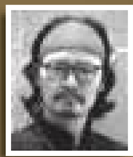

पहली बार साहित्य संस्कृति की इतनी बड़ी महफिल में भाग लेकर अच्छा लगा। मेरी मातृभाषा तिब्बती है और मैं अंग्रेज़ी में कविता लिखता हूँ। हिन्दी की महफिल में मेरे किये अनुवादों को शामिल किया जाना, महत्वपूर्ण रचनात्मक अवसर रहा। मुशायरा बेमिसाल था।

– तेंजिम तसन्डू, अनुवादक, तिब्बत

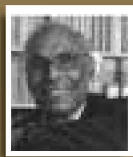

व्यापक स्तर पर इस ढंग से एक वृहद् उत्सव मनाना, जहाँ लेखक, साहित्यकार, रंगकर्मी, चित्रकार.... सारे लोग मौजूद हों, अपने आप में विलक्षण है यह सब! इसकी जो भव्यता है दिल को छूने वाली है। माइण्ड यहाँ ब्लोइंग होता है और ये सब मुझे अनुभव हो रहा है।

– इन्द्रनाथ चौधरी, साहित्यकार

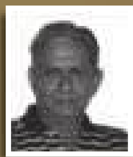

'विश्वरंग' में युवाओं को हम सम्बोधित कर रहे हैं और एक संदेश दे रहे हैं कि वो देश की वर्तमान राजनीति को समझें, देश की वर्तमान सामाजिक चेतना को परखें। एक ज़रूरी हस्तक्षेप लगा युवाओं का यहाँ होना। हम जैसे वरिष्ठ कवियों को युवाओं के साथ इन्टरैक्शन का जो अवसर मिला वह दुर्लभ और आत्मीय क्षण रहा। सब तरह के उतार–चढ़ाव मैंने हिन्दी कविता के देखे हैं, लेकिन मैं हमेशा आधुनिक कविता के निकट रहा और तात्कालिक सत्य और यथार्थ को चित्रित करता रहा अपनी कविता में। विश्वरंग में आए युवा रचनाकारों से ऊर्जा मिलती रही मुझे।

– ऋतुराज, कवि–चिंतक

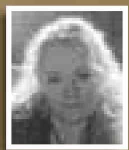

विश्वरंग मेरे लिए न केवल टैगोर बल्कि हिन्दुस्तान की सुंदर संस्कृति को गहराई से जानने का एक ज़रिया बना है। मुझे आश्चर्य होता है कि टैगोर का लिटरेचर सारी दुनिया की मनुष्यता की आवाज़ बन सका है।

– सेमिदा डेविड, लेखक, रोमानिया

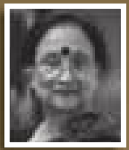

दिल्ली पहुंचकर 'विश्वरंग' को बहुत बहुत याद किया। गहरी संतुष्टि हुई। अद्भुत महोत्सव संपन्न हुआ। ऊँचाइयों को छूता हुआ। मैं विश्व हिंदी सम्मेलन की कार्यकारिणी और उसके सभी कार्यक्रमों के निर्धारण में सक्रिय रही हूँ , 11 वें सम्मेलन तक, लेकिन रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित यह अंतरराष्ट्रीय समारोह, कहने में गुरेज नहीं कि अपने तमाम आयामों और परिणितियों में और तुलना में विशेष रहा। विश्वरंग सब की मेहनत का नतीजा है और संतोष के विजन और अथक परिश्रम का समवेत प्रतिफल।

–चित्रा मुद्गल, कथाकार

सरकारी समारोह तो बहुत सारे होते देखता रहा हूँ, लेकिन एक प्राइवेट यूनिर्वसिर्टी ने साहित्य और कला के प्रति इस तरह बहुत बड़े पैमाने पर जो दायित्व निर्वाह विश्वरंग में प्रकट किया है, वह बहुत ही सराहनीय है। दुनियां के अनेक मुल्कों से लेखक, शिक्षाविद्, मीडियाकर्मी ही नहीं बल्कि बड़ी तादाद में विद्यार्थियों का इसमें पूरी रुचि के साथ शरीक होना इस उत्सव की उपलब्धि है। विश्वरंग में प्रवेश नि:शुल्क यह और खास बात।

– के. श्रीनिवास राव, सचिव साहित्य अकादेमी, दिल्लीी

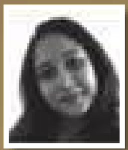

मेरा सौभाग्य है कि 'विश्वरंग' में मुझे अवार्ड मिला है प्रिंट मेकिंग के लिए। उसके लिए तो खुश हूँ ही। दूसरी बड़ी उपलब्धि यहाँ देश–दुनिया के गुणी और नामचीन कलाकारों से मिलना और संवाद करना है। कई कलाकारों का बहुत अच्छा वर्क देखने को मिला। सेमिनार्स से बहुत कुछ सीखने को मिला।

– अनुपमा डे, चित्रकार

टैगोर यूनिर्वसिटी को थैंक्स कहना चाहूँगी कि उन्होंने हम लोगों को 'विश्वरंग' में इतनी बड़ी अपॉर्च्युनिटी दी। अपनी भावनाओं को हम अपनी लेखनी में अभिव्यक्त करते हैं लेकिन यह अभिव्यक्ति जब 'विश्वरंग' जैसे विशाल मंच का हिस्सा बनती है तो इसका दायरा बढ़ जाता है।

– आलिया शेख, लेखिका

मैं इजराइल से इस सांस्कृतिक महोत्सव में आया हूँ। भारत से मेरा सम्पर्क बहुत पुराना है। ये बहुत अच्छी बात है कि हिन्दी को, बड़ा महत्व दिया जा रहा है। भाषा के त्यौहार की खुशी है।

– गेनाद्य श्लोम्पर, भाषाविद्, इजराइल़

संतोष चौबे

पुरस्कार और सम्मान :

साहित्य में अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय मान्यता/पुरस्कार :

- अंतरराष्ट्रीय मैक्समूलर अलंकार 2025, नीदरलैंड्स
- सुदीर्घ सेवा सम्मान 2025
- महात्मा हंसराज राष्ट्रीय सम्मान 2026
- अति विशिष्ट साहित्य विभूषण सम्मान 2026
- राष्ट्रीय शब्द निरंतर सम्मान 2026
- कर्मवीर सम्मान 2026
- लंदन में समग्र साहित्यिक योगदान के लिए वातायन, यूके अंतरराष्ट्रीय शिखर सम्मान।
- न्यूयार्क से समग्र साहित्यिक योगदान के लिए पंडित तिलक राज शर्मा न्यास शिखर सम्मान।
- पेरिस में 'भारत गौरव सम्मान'।
- 'जलतरंग' उपन्यास के लिए, लेखकों श्री लक्ष्मीशंकर बाजपेयी और श्री तरुण विजय द्वारा प्रदत्त इंटरनेशनल वैली आफ वर्ड्स अवार्ड।
- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, भारत के राष्ट्रपति से राष्ट्रीय नवाचार पुरस्कार।
- समग्र साहित्यिक योगदान के लिए राष्ट्रीय दुष्यंत अलंकरण।
- पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री श्री मोहन यादव से चाणक्य पुरस्कार 2022
- कविता के लिए लेखक श्री नरेश मेहता द्वारा प्रदत्त मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी का दुष्यंत कुमार पुरस्कार।
- 'जलतरंग' उपन्यास के लिए राज्यपाल श्री ओ.पी. कोहली द्वारा प्रदत्त शैलेश मटियानी अवार्ड।
- वाल्टर बेंजामिन लिखित मास्को डायरी के अनुवाद के लिए, राज्यपाल द्वारा प्रदत्त मध्य प्रदेश राजभाषा प्रचार समिति का हजारी लाल रघुवंशी पुरस्कार।
- मध्य प्रदेश सरकार और जनसंपर्क सोसायटी से प्रथम मध्य प्रदेश रत्न पुरस्कार।
- साहित्य के क्षेत्र में लोक चेतना के लिए डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन स्मृति सम्मान।
- प्रो. आफाक अहमद मेमोरियल अवार्ड–2021 (हिंदी साहित्य)।
- हिंदी में लेखन के लिए अभिनव कला परिषद से अभिनव शब्द शिल्पी पुरस्कार।
- श्रीमती अर्चना चिटनिस द्वारा प्रदत्त मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी का डॉ. शंकरदयाल शर्मा सृजन सम्मान।

राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा नेस्कॉम
राष्ट्रीय आईटी इनोवेशन अवार्ड ग्रहण करते हुये

पेरिस (फ्रांस) में 'भारत गौरव सम्मान' 2024

समग्र साहित्यिक योगदान के लिए वातायन, यूके द्वारा लंदन में अंतरराष्ट्रीय शिखर सम्मान

राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली के कर कमलों से शैलेश मटियानी पुरस्कार प्राप्त करते हुए

जलतरंग' उपन्यास के लिए इंटरनेशनल वैली आफ वर्ड्स अवार्ड

'जलतरंग' उपन्यास के लिए राज्यपाल श्री ओ.पी. कोहली द्वारा शैलेश मटियानी अवार्ड

प्रो. आफाक अहमद मेमोरियल अवार्ड–2021

मध्य प्रदेश शासन और जनसंपर्क सोसायटी द्वारा प्रथम मध्य प्रदेश रत्न पुरस्कार

- 'सपनों की दुनिया में ब्लैक होल' उपन्यास के लिए द्राक्षा रत्न अलंकरण।
- समग्र साहित्यिक योगदान के लिए साहित्य की बात (विदिशा) से शिखर सम्मान।
- अशोक जैन भाभा द्वारा अभिनव कला परिषद का लोकचेतना पुरस्कार।
- दुष्यंत संग्रहालय, भोपाल, मध्य प्रदेश से उत्कृष्ट चर्चित चेहरा पुरस्कार।
- संस्कृत शोध संस्थान से भारतीय संस्कृति रत्न 2017 पुरस्कार।
- 8वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन (केंद्रीय बैंक) में साहित्य और शिक्षा में योगदान के लिए सम्मान।
- कला आलोचना के लिए स्पंदन पुरस्कार।
- मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति (इंदौर) का शताब्दी सम्मान।

सम्मान/पुरस्कार "विज्ञान के क्षेत्र में" :

- राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान 2022
- डॉ. शंकर दयाल शर्मा सृजन सम्मान, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा विज्ञान विषयों पर लेखन के लिए।
- राष्ट्रीय विज्ञान संचार पुरस्कार।
- विज्ञान लेखन के लिए मेघनाद साहा पुरस्कार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार (1986)।
- इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए पत्रिका के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति पुरस्कार।
- इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए पत्रिका के लिए राष्ट्रीय प्रचार शील्ड पुरस्कार।
- इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए पत्रिका के लिए रामेश्वर गुरु सम्मान।
- इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए पत्रिका के लिए भारतेंदु पुरस्कार।
- इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए पत्रिका के लिए सारस्वत सम्मान।
- एम्प्री भोपाल तथा विज्ञान भारती द्वारा हिंदी में विज्ञान के प्रचार–प्रसार के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार।
- एम्प्री, भारत सरकार द्वारा विज्ञान के लोक–व्यापीकरण के लिए विज्ञान उत्कृष्टता पुरस्कार।
- सामाजिक उद्यमिता के लिए अशोका इंटरनेशनल से सीनियर अशोका फेलोशिप (2011)।
- सूचना प्रौद्योगिकी – एशियन फोरम अवार्ड।
- विश्वविद्यालयों में शिक्षा में आईसीटी के उपयोग के लिए वर्ल्ड एजुकेशन समिट अवार्ड।
- राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम द्वारा राष्ट्रीय नवाचार पुरस्कार।
- राष्ट्रीय ई–गवर्नेंस अवार्ड में गोल्डन आइकन अवार्ड।
- राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा नेस्कॉम (NASSCOM) राष्ट्रीय आईटी इनोवेशन अवार्ड।

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन के करकमलों से
आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रे विज्ञान संवर्धन सम्मान 2024 प्राप्त करते हुए

उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए मैनिट (एनआईटी, मानव संसाधन विकास मंत्रालय)
द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, 2013

राजपाल श्री मंगु भाई पटेल के कर कमलों से
प्राइड ऑफ भोपाल अवार्ड 2022 प्राप्त करते हुए

सामाजिक उद्यमिता के लिए अशोक इंटरनेशनल द्वारा सीनियर अशोका फेलोशिप 2011

पूर्व राज्यसभा सांसद एवं तुलसी मानस संस्थान के कार्याध्यक्ष
श्री रघुनंदन शर्मा से कर्मवीर सम्मान 2026 प्राप्त करते हुए

विश्व शिक्षा शिखर सम्मेलन अवार्ड, दुबई 2016

नरेश मेहता द्वारा मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी का दुष्यंत कुमार पुरस्कार

पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री श्री मोहन यादव से चाणक्य पुरस्कार 2022

अपनी व्यावसायिक यात्रा में अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय पुरस्कार :

- सामाजिक उद्यमिता के लिए विश्व आर्थिक मंच का श्वाब फाउंडेशन पुरस्कार (2010)
- सामाजिक उद्यमिता के लिए अशोक इंटरनेशनल से सीनियर अशोका फेलोशिप (2011)
- एशियाई फोरम का सूचना प्रौद्योगिकी के लिए डेवलपमेंट अवार्ड, क्वालालम्पुर, मलेशिया (2007)
- विश्वविद्यालयों में शिक्षा के क्षेत्र में आईसीटी के उपयोग के लिए विश्व शिक्षा सम्मेलन पुरस्कार, दुबई (2013)
- वित्तीय समावेशन के लिए मंथन साउथ एशिया पेसिफ़िक पुरस्कार (2012)
- वर्ल्ड एचआरडी बेस्ट इन क्लास लर्निंग अवार्ड, विश्व शिक्षा शिखर सम्मेलन, नई दिल्ली (2014)
- विश्व शिक्षा शिखर सम्मेलन अवार्ड, दुबई (2016)
- ईओ यूएन एसडीजी सामाजिक इम्पैक्ट अवार्ड, 2019, न्यूयॉर्क, यूएसए (शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, असमानताओं को दूर करने और रोजगार सृजन से संबंधित एसडीजी के लिए)
- भारतीय नवाचार पुरस्कार 2005, राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा (2005)
- राष्ट्रीय ई–गवर्नेंस पुरस्कार, भारत सरकार का गोल्डन आइकन अवार्ड (2005)
- राष्ट्रीय (नैसकॉम) आईटी नवाचार पुरस्कार, राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा (2006)
- नैसकॉम इमर्ज 50 लीडर अवार्ड (2009)
- टाई–ल्यूमिस उद्यमिता उत्कृष्टता पुरस्कार (2009)
- कंप्यूटर शिक्षा में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय सीएसआई (कंप्यूटर सोसाइटी ऑफ इंडिया) पुरस्कार (2011)
- कौशल शिक्षा के लिए, स्कॉच पुनर्जागरण पुरस्कार (2013)
- वित्तीय समावेशन और भुगतान प्रणाली पुरस्कार (2013)
- एनसीएसटीसी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान संचार पुरस्कार (1987)
- विज्ञान लेखन के लिए मेघनाद साहा पुरस्कार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार (1986)
- उपन्यास जलतरंग के लिए वैली ऑफ वर्ड्स अवार्ड (2015)
- राष्ट्रीय दुष्यंत अलंकरण, साहित्य के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट्स अवार्ड (2020)
- कला और साहित्य के प्रचार–प्रसार के लिए राष्ट्रीय शिव मंगल सिंह सुमन सम्मान (2020)
- विज्ञान संचार हेतु सीएसआईआर–एम्प्री (CSIR&AMPRI) लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड (2019)
- उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, (एनआईटी, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा (2013)
- एनएसडीसी (भारत सरकार) द्वारा कौशल विकास में उत्कृष्टता पुरस्कार (2015)
- एसोचैम स्किल इंडिया अवार्ड (2016)
- एसोचैम इंडिया लीडरशिप अवार्ड (2017)
- राष्ट्रीय गुणाकर मुळे सम्मान (2020)

eGov India Award 2011
Indian Innovation Award 2005
Social Entrepreneur of the Year Award 2010
TiE Lumis Partners Entrepreneurial Excellence Award 2009
Shiksha Ratna Award 2012
Golden Icon National E-Governance Award 2005
Financial Inclusion & Payment Systems Award 2013
Bihar Innovation Forum Award
Skoch Corporate Leadership Award 2013
27th amongst the fastest growing mid-size businesses in India 2011
NASSCOM Emerge 50 Leader Award 2009
ASSOCHAM National Education Excellence Awards (AISECT University)
NASSCOM I.T. Innovation Award 2006
ASHOKA Senior Fellowship 2011
Voted amongst the top 100 franchises in 2010 and 2011
Manthan Award South Asia & Asia Pacific 2012
The National CSI Award 2011
Elets Smart City Award, 2015 for Skill Development initiatives
World Education Award 2016, Dubai (Brainy Bear Pre-school & Activity Club)
Asian Forum I4D Award 2007
Editor's Choice: Edupreneur Award 2016 (Dubai)

संतोष चौबे

प्लॉट नं. 7-9, सेवॉय सावन
होशंगाबाद रोड, रतनपुर, भोपाल-47
मो. : +91-9826256733
ईमेल : choubey@aisect.org